अमृत विचार

लोक दर्पण

रविवार, 9 जून 2024 | www.amritvichar.com

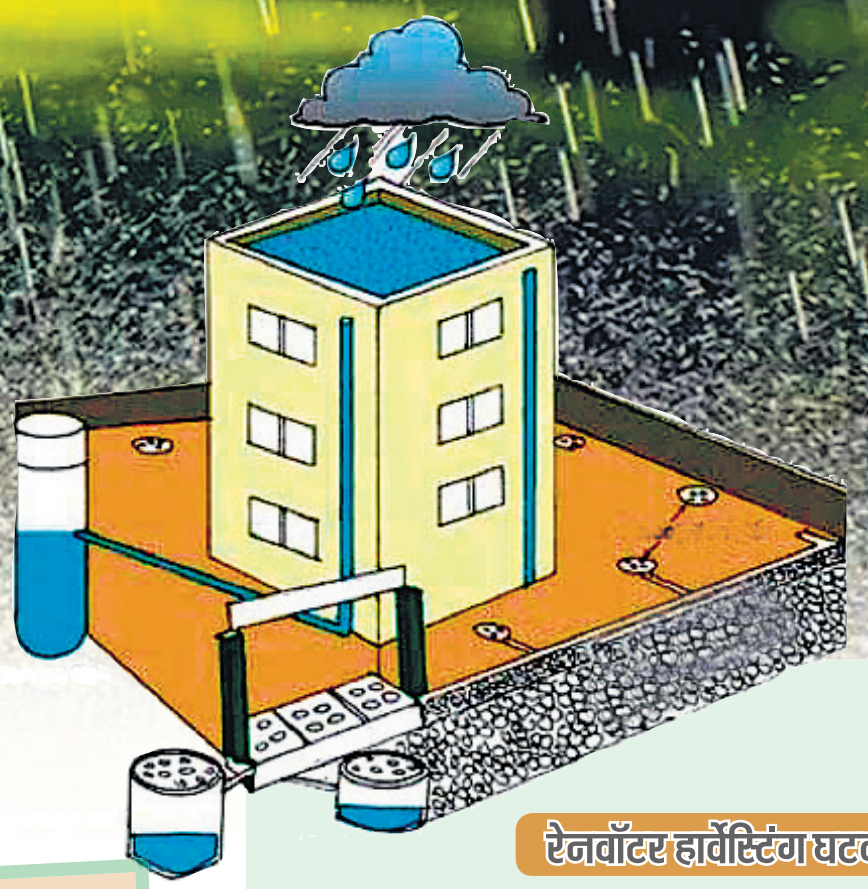

सहेजना होगा

वर्षा का कीमती जल

दुनिया जल संकट से जूझ रही है। यदि शोध की बात करें तो यह संकट आने वाले वर्षों में और अधिक गहरा सकता है। इसका सबसे प्रमुख कारण मानव की गलत आदतें हैं। हम अपने स्वार्थ के लिए प्राकृतिक जल स्रोतों का बेदर्दी से दोहन कर रहें हैं जिसका नतीजा यह हुआ कि प्राकृतिक जल स्रोत सूखते जा रहे हैं। हम रोज सुबह को घर और सड़क की धुलाई के लिए लीटरों पानी बिना उफ्फ किए बहा देते हैं, लेकिन जल के बचाव के लिए कोई कार्य नहीं करते हैं। जल संकट को लेकर मुहिम चलाने की बात तो की जाती है, लेकिन यह महज नारों और चर्चा तक ही सीमित रह जाती है। जल के बचाव व संचयन के लिए की दिशा में कोई ठोस उपाय हम नहीं करते हैं। भारत में प्रति वर्ष होने वाली वर्षा का कीमती जल हम यूंही नालों में जाने देते हैं। अगर वर्षा के जल का संग्रहण कर लिया जाए तो काफी हद तक जल समस्या से निजात पाई जा सकती है।

डॉ.विकास खुराना
शाहजहांपुर

भारतीय मनीषा वैदिक काल से ही जल के प्रति आराध्य दृष्टिकोण रखते हुए उसकी महिमा का गान करती आई है। वरुण हमारे यहां जल के देव हैं जबकि इंद्र उसके अधिपति। मां गंगा, यमुना और सरस्वती नदियां वैदिक काल से ही पूजनीय रही हैं। हमारे घरों के बच्चे तालाब के यक्ष और महाराज युधिष्ठिर के संवाद को खूब भली-भांति जानते हैं। आधुनिक परिवेश में घटते वनावरण और कम होती हरियाली ने धरती पर ताप बढ़ाया है जिससे नम भूमि, तालाब, झीलें न केवल समाप्त होती चली जा रहीं हैं, बल्कि भूगर्भ जल का स्तर भी चिंता की स्थिति में है। सुधि तथा प्रबुद्ध जन जानते हैं कि जल ही जीवन है। इसके बिना धरती पर प्राणों का संचार संभव नहीं। लिहाजा चुनौतियों से निपटने के लिए सामुदायिक स्तर पर अनेक प्रयास भी शुरू हुए हैं। वृक्षारोपण, नदी बचाओ अभियान, चिड़िया बचाओ अभियान इनमें कुछ एक हैं। आधुनिक विज्ञान भी धरती पर जल बचाने के लिए अनेक नए आयाम खोल रहा है। इनमें से एक है रेन हार्वेस्टिंग सिस्टम।

जल की स्थिति

भारत यद्यपि अपने प्राकृतिक संसाधनों में विश्व के अनेक देशों की तुलना में अत्यंत समृद्ध है, किंतु यहां भी क्षेत्रीय असमानता अधिक है। देश के 71 प्रतिशत जल केवल 36 प्रतिशत क्षेत्रफल में ही पाया जाता है, शेष 64 प्रतिशत जल 29 प्रतिशत के क्षेत्रफल में है। एक रिपोर्ट के मुताबिक देश में प्रति व्यक्ति जल की उपलब्धता मात्र 1486 घन मीटर है। इस कारण गंगा के मैदानी इलाकों में जहां वर्षा की अधिकता तथा मानसून की कृपा दृष्टि के कारण भूगर्भ जल उच्च है, वहीं राजस्थान जैसे इलाकों में पानी के लिए त्राहि-त्राहि बनी रहती है।

जल संचयन का इतिहास

विश्व के अनेक देशों में जल संचयन की तकनीक बहुत ही प्राचीन है। इजराइल के जेरूसलम में प्राप्त अवशेष इनमें सबसे प्राचीन बताए जाते है। अगर भारत की बात की जाए तो सैंधव सभ्यता में जल की पवित्रता को ध्यान में रखते हुए बृहद कुंड और घरों पर कुएं जल संचयन के प्राचीनतम प्रणाम हैं। इसी प्रकार चोल राजाओं द्वारा भगवान वृहदेश्वर मंदिर तंजोर के बड़े मंदिर में कुंड बनाकर वर्षा जल का संचयन किया जाता था। राजस्थान जहां मानसूनी वर्षा के उदाहरण कम रहते हैं में जोहड़ बांध तथा झालावार बनाकर वर्षा जल संचयन के अनेक उदाहरण मिलते हैं।

बारिश के पानी से अनेक फायदे

रेन हार्वेस्टिंग सिस्टम का उपयोग अनेक घरेलू और कृषि फायदों में किया जा सकता है। कृषि में जहां सिंचाई, बिजली तथा डीजल की बढ़ती दर के कारण महंगी होती जा रही है, जो कृषकों पर अनावश्यक बोझ डालती है। वर्षा जल संचयन और नाली के जरिए वे कृषि लगात को कम कर सकते हैं। इसी प्रकार घरेलू उपयोग में गैर पेयजल के लिए इसका उपयोग किया जा सकता है, क्योंकि वर्षा जल मीठा होता है। अत : कपड़े धोने में भी कम डिटर्जेंट का प्रयोग होता है तथा घर के गमलों में यह नमक को खत्म कर देता है जिससे पौधों की अप्रत्याशित वृद्धि देखने में आती है। स्प्रिंगडेल प्रणाली, फव्वारों, वाहन धोने, मछली पालन इत्यादि में भी यह लाभप्रद है। आजकल जहां महानगरों में बिजली के मीटर लगाए जा रहे हैं, यह प्रणाली घर के बजट को संतुलित करती है। इसके साथ हरित घर योजना में भी यह लाभप्रद है, क्योंकि यह पर्यावरण मित्र है, जो गिरते भूजल को रोकने का काम करती है। व्यापक पैमाने पर भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में यह बाढ़ के पानी से होने वाले कटाव को भी कम कर सकती है।

विश्व की अधिकतम प्रणालियों के अपने लाभ-हानि होते हैं, किंतु रेन हार्वेस्टिंग सिस्टम जब भारत से तालाब, झीलें, पोखर गायब होते जा रहे हैं ऐसे में एक आशावादी किरण है। इस पर अभी और अनुसंधान किए जाने की जरूरत है। हमें याद रखना चाहिए कि घटते वन वर्षा को कम करते जा रहे हैं और भूजल एक गंभीर चुनौती बनने जा रहा है। उसकी समृद्धि में ही लोक की समृद्धि छिपी है।

शुरू हो चुके हैं प्रयास

ऐसा नहीं है कि देश में वर्षा के जल को ऐसे ही व्यर्थ जाने दिया जाता है। कुछ जगहों पर इसको सहजने के प्रयास जारी हैं, जो पूरे देश के लिए एक उदाहरण पेश कर रहें हैं। जैसे रायपुर में 1600 स्क्वायर फीट के मकान में रेन हार्वेस्टिंग सिस्टम लगाना अनिवार्य है, इसके बिना मकान का नक्शा पास नहीं होता। वहीं यूपी का पहला रेन वाटर हार्वेस्टिंग थीम तैयार पार्क में रोबोट बताएंगे 'आसमानी अमृत' सहेजने के गुर। केडीए ने इंदिरा नगर में डेढ़ एकड़ भूमि पर प्रदेश के पहले रेन वाटर हार्वेस्टिंग थीम पार्क का निर्माण कराया है। इस वर्ष देश की राजधानी दिल्ली में एमसीडी की ओर से 258 रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम तैयार किए हैं। राजस्थान में जहां मानसूनी वर्षा कम होती है वहां अब न्यूनतम 150 वर्गमीटर क्षेत्रफल के भूखंड पर रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम बनाना अनिवार्य करने की तैयारी है। इससे बड़े भूखंडधारियों को बारिश का पानी को सहेजना अनिवार्य हो जाएगा। इसके अलावा मध्य प्रदेश में सभी कमर्शियल बिल्डिंग, शासकीय भवन, शासकीय अधिकारियों के भवन व 1500 वर्ग फीट से बड़े आवासीय भवनों के लिए रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम लगवाना अनिवार्य किया जा रहा है।

क्या है रेन हार्वेस्टिंग प्रणाली

इस समय की नई प्रचलित शब्दावली में एक है रेन हार्वेस्टिंग प्रणाली जिसका अभिप्राय वर्षा जल संचयन से है। हम जानते है कि वर्षा ही धरती पर शुद्ध और मीठे जल का एकमात्र जरिया है। यही वर्षा जब छह हजार मीटर ऊंची पर्वत चोटियों पर पड़ती है तो ग्लेशियर बनाती है जिससे सतत वाहिनी नदियां धरती पर बहती हैं। इसी वर्षा का दो प्रतिशत पानी भूगर्भ जल के रूप में धरती के नीचे छन कर पहुंचता है जिससे मीठे जल का संचयन होता जाता है। किंतु वर्तमान समय में जब वर्षा की मात्रा कम और प्रकृति अनिश्चित होती जा रही है, धरती पर मीठे जल के लिए संकट पैदा हो गया है। भूगर्भ जल के अत्यधिक दोहन ने जल के स्तर को बेहद नीचे कर दिया है और अनेक इलाके ब्लैक जोन में पहुंच गए हैं। ऐसे में रेन हार्वेस्टिंग सिस्टम वर्षा जल की कीमती बूंदों को बचाने का एक प्रयास है।

जल संचयन की यह प्रणाली बहुत ही आसान है। इस पर अनुमानित लागत भी बेहद कम है। चार सौ वर्ग स्क्वायर के मकान में इसका खर्च हजार से बारह सौ रुपए मात्र आता है। इसके दो प्रकार हैं एक में दैनिक कार्यों हेतु जल के प्रयोग हेतु यथा सफाई, पौधों की सिंचाई, कपड़े धोना इत्यादि। इसके लिए एक पक्का सीमेंटेड गड्ढा बनाया जाता है जिसकी लंबाई-चौड़ाई क्रमशः दस से बारह फीट एवं चार फीट होती है। घर की छत पर गिरने वाले पानी को पाइप के जरिए इसमें उतार दिया जाता है, जो फिल्टर होता जाता है जबकि दूसरी प्रकार की तकनीक का प्रयोग फसलों की सिंचाई के लिए होता है। इसमें गड्ढे कच्चे ही रखे जाते हैं। जल की एक-एक बूंद कीमती है तथा वर्षा जल ही जीवन है के उद्देश्य के साथ यह तकनीक काम करती है।

रेनवॉटर हार्वेस्टिंग के फायदे

यह स्टॉर्मवॉटर रन ऑफ को काबू करता है

भारी बारिश और बाढ़ के दौरान आप देखेंगे कि मिट्टी की ऊपरी सतह बारिश के पानी के साथ बह जाती है, लेकिन जब आपके पास हार्वेस्टिंग सिस्टम होता है तो यह पानी बहकर बर्बाद नहीं होता है और आगे इस्तेमाल करने के लिए जमा हो जाता है। यह बाढ़ को कम करने का एक बेहतरीन तरीका है।

खेती के लिए बेहतर

हमारे घरों में आने वाले पानी को हम तक सप्लाई करने से पहले हमेशा थोड़े से क्लोरीन से साफ किया जाता है। बारिश का पानी शुद्ध होता है और इसमें किसी भी तरीके की गंदगी और दूषित पदार्थ (जैसे कि नाइट्रोजन, ब्लीच, कीटनाशक, फैक्ट्री का केमिकल युक्त पानी आदि) नहीं होते हैं। क्योंकि यह पानी शुद्ध और मीठा होता है, इससे पौधों और मिट्टी में मौजूद नमक फ्लश हो जाता है और इसलिए यह ज्यादा फायदेमंद होता है।

भूजल पर निर्भरता और मांग को कम करता है

अगर आपने कभी बोरवेल लगवाया होगा तो आपको पता होगा कि भूजल तक पहुंचने के लिए इसे कितना गहरा खोदना पड़ता है। जैसे-जैसे वाटर टेबल कम होने लगता है, इन कुओं में पानी लाने के लिए और ज्यादा गहरा खोदना पड़ता है। जब आपको गहरा कुआं खोदना होता है तो इसमें काफी ज्यादा खर्चा भी होता है। सबसे जरूरी बात यह है कि ऐसा करने से धरती की ऊपरी तह कमजोर हो सकती है जिससे मिट्टी ढह सकती है।

लगभग हर काम के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है

जैसा कि ऊपर बताया गया है, बारिश के पानी में बेहद कम दूषित पदार्थ होते है और यह मीठा पानी होता है। इसलिए आप बारिश के पानी को कपड़े धोने, बर्तन धोने, कार धोने, नहाने और टॉयलेट फ्लश करने जैसी कई चीजों के काम में इस्तेमाल कर सकते हैं। इसकी सबसे अच्छी बात यह है कि यह मीठा पानी होता है, इसलिए आपको कपड़े धोने के दौरान कम डिटर्जेंट इस्तेमाल करना पड़ेगा और आप खारे पानी से होने वाले नुकसान से भी बच सकेंगे।

पानी के बिल के खर्च को कम करता है

एक अनुमान के मुताबिक हर इंसान एक दिन में लगभग 80-100 गैलन पानी का इस्तेमाल करता है। इस हिसाब से तीन इंसानों वाले घर में आप हर दिन 300 गैलन पानी का इस्तेमाल करते हैं। जैसे-जैसे पानी की कमी होगी वैसे-वैसे पानी की कीमतें बढ़ेगी, मगर रेनवॉटर हार्वेस्टिंग करने से ऐसे हालात से पूरी तरह बचा जा सकता है। आपके पास खुद की सुरक्षित और मुफ्त पानी की सप्लाई होगी और आपको पानी के महंगे बिल को भरने की चिंता भी नहीं करनी पड़ेगी।

रेनवॉटर हार्वेस्टिंग घटक

कैचमेंट (जल संग्रहण)
यह कच्चा या पक्का एरिया होता है, जहां वर्षा की पहले पहल बूंद पड़ती है। जैसे मकान की छत या फिर आंगन अथवा खेत।

मोटी जाली
कैचमेंट से आने वाले पानी को एक मोटी जाली जिस पर घास-फूस रखकर फिल्टर कर लिया जाता है ताकि कैचमेंट से पानी के साथ आने वाले अन्य तत्व प्रथम स्तर पर ही अलग हो जाएं।

कन्डुएंट्स
यह पाइप लाइन अथवा नाली है, जो कैचमेंट से जुड़ी होती है इसी के ऊपरी सिरे पर जाली लगी होती है, जैसे की छत का पाइप।

पहला फ्लश
वर्षा के पहले जल में अशुद्धियां या कैचमेंट की मिट्टी, रेत अन्य तत्व आ जाते हैं, जिसे पहले फ्लश के माध्यम से बाहर निकाल दिया जाता है।

फिल्टर
इसके बाद आने वाले जल को फिल्टर कर दिया जाता है। यह फिल्टर बारीक होता है तथा अनेक प्रकार का हो सकता है जैसे कि चारकोल वाटर फिल्टर, सैंड फिल्टर, स्लो सैंड फिल्टर इत्यादि।

टैंक
यह आयताकार, चौकोर, बेलनाकार किसी भी आकार का हो सकता है। घरों के टैंक अमूमन पक्के सीमेंटेड तथा कृषि क्षेत्र के कच्चे रखे जाते हैं।

रिचार्ज स्ट्रक्चर
टैंक के पानी से भूगर्भ जल स्तर को ऊंचा उठाने के लिए प्रयुक्त होता है।

रेनवॉटर हार्वेस्टिंग के तरीके

डायरेक्ट पंप :- यह सबसे ज्यादा उपयोग में लाया जाने वाला प्रकार है और घरों में बहुतायत से इस्तेमाल होता है। इसमें पानी सीधा वही पंप होता है, जहां उसका इस्तेमाल करना होता है।

इनडायरेक्ट पंप :- इस पद्धति में पानी का टैंक स्थाई रूप से नहीं बनाता। प्लास्टिक की टंकियां इसमें उपयोग की जाती है, जिन्हें एक जगह से दूसरी जगह रखा जा सकता है।

इनडायरेक्ट ग्रेविटी :- इस सेटअप में रेनवॉटर हार्वेस्टिंग टैंक में इकट्ठा किए गए पानी को वरहेड टैंक में पंप कर दिया जाता है। पाइप को इस ओवरहेड टैंक के साथ जोड़ा जाता है और फिर घरों में पानी की सप्लाई होती है। अगर पानी खत्म होने लगता है तो मेन सप्लाई से आने वाले पानी को रेनवॉटर हार्वेस्टिंग टैंक में भेजने की जगह सीधे ओवरहेड टैंक में पंप कर दिया जाता है।

ग्रेविटी ओनली :- यह एक विशेष प्रकार है जिसमें गुरुत्वाकर्षण शक्ति नहीं काम करती तथा पानी स्वचालित पंप होता रहता है, किंतु यह कम जगह ही हो पाता है।

आओ करें मानसून के स्वागत की तैयारी

गर्मी के मौसम का प्यास से सीधा नाता है, लेकिन गंभीरता से सोचें हमारी प्रकृति कभी इतनी निष्ठुर नहीं रही कि इंसान को प्यास रखे। यह तो हम ही हैं जिसने सोच पर मिट्टी की परत चढ़ा ली है और अपने आसपास छिटकी जलनिधियों को बिसरा कर बैठ गए। गर्मी में तनिक इनकी सफाई हो जाए तो आने वाले साल संकट नहीं रहे। डीसीएम श्रीराम फाउंडेशन और सत्व नॉलेज द्वारा तैयार एक ताजा शोध चेतावनी देता है कि दुनिया की सर्वाधिक आबादी वाले देश भारत में जल संकट का गंभीर खतरा मंडरा रहा है। रिपोर्ट में दावा किया गया है कि 2050 तक भारत के 50 प्रतिशत से ज्यादा जिलों में पानी का विकट संकट हो सकता है। एक तरफ आने वाले 25 सालों में प्रति व्यक्ति पानी की मांग में 30 प्रतिशत की बढ़ोतरी होगी तो वहीं जलवायु परिवर्तन सहित कई बदलाव के चलते जल संसाधनों की कमी के चलते प्रति व्यक्ति जल की उपलब्धता में 15 प्रतिशत की कमी आ सकती है। पानी की बढ़ती मांग और सप्लाई में कमी के चलते संतुलन बिगड़ने की संभावना है। इसी कारण 2050 तक देश के 50 प्रतिशत जिलों में पानी का भयंकर संकट खड़ा हो सकता है। रिपोर्ट में पानी की कमी का असर खेती पर पड़ने के बारे में विमर्श है।

पंकज चतुर्वेदी
वरिष्ठ पत्रकार

इस बार गर्मी जल्दी आई और साथ में प्यास भी गहराई। केंद्र सरकार की हजार करोड़ की "हर घर जल योजना" ने बढ़ते ताप के सामने दम तोड़ दिया, आखिर धरती का सीना चीरकर गहराई से पानी उलीचने से हर एक का कंठ तर होने से रहा। वैसे हकीकत तो यह है कि अब देश के 32 फीसदी हिस्से को पानी की किल्लत के लिए गर्मी के मौसम का इंतजार भी नहीं करना पड़ता है- बारहों महीने, तीसों दिन यहां जेठ ही रहता है। समझना होगा कि एक अरब 44 करोड़ की विशाल आबादी को पानी देना महज सरकार के जिम्मे नहीं छोड़ जा सकता। यह गर्मी और सूखती जल निधियों के प्रति यदि समाज आज सक्रिय हो जाए तो अगली गर्मी में उन्हें यह संकट नहीं झेलना होगा। एक बात समझ लें प्रकृति से जुड़ी जितनी भी समस्या हैं उनका निदान न वर्तमान के पास है न भविष्य के। इसके लिए हमें अतीत की ही शरण में जाना होगा। थोड़ी गाद हटानी होगी, कुछ सूख चुकीं हमारे पुरखों द्वारा बनाई जल निधियों से और कुछ अपनी समझ से देखें थोड़ी भी बरसात हुई तो समाज पानीदार बन सकता है।

अतीत में देखें

यदि कुछ दशक पहले पलट कर देखें तो आज पानी के लिए हाय-हाय कर रहे इलाके अपने स्थानीय स्रोतों की मदद से ही खेत और गले दोनों के लिए अफरात पानी जुटाते थे। एक दौर आया कि अंधाधुंध नलकूप रोपे जाने लगे, जब तक संभलते जब तक भूगर्भ का कोटा साफ हो चुका था। समाज को एक बार फिर बीती बात बन चुके जल-स्रोतों की ओर जाने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है-तालाब, कुएं, बावड़ी, लेकिन एक बार फिर पीढ़ियों का अंतर सामने खड़ा है, पारंपरिक तालाबों की देखभाल करने वाले लोग किसी और काम में लग गए और अब तालाब सहेजने की तकनीक नदारद हो गई है। तभी बीते तीन दशक में केंद्र और राज्य की अनेक योजनों के तहत तालाबों से गाद निकालने, उन्हें सहेजने के नाम पर अफरात पैसा खर्च किया गया और नतीजा रहा 'ढाक के तीन पात'।

भारत के हर हिस्से में वैदिक काल से लेकर ब्रितानी हुकूमत के पहले तक सभी कालखंडों में समाज द्वारा अपनी देश-काल- परिस्थिति के मुताबिक बनाई गई जल संरचनाओं और जल प्रणालियों के कई प्रमाण मिलते हैं जिनमें तालाब हर एक जगह है। रेगिस्तान में तो उन तालाबों को सागर की उपमा दे दी गई तो कन्नड़ में कैरे और तमिल में ऐरी। यहां तक कि ऋग्वेद में सिंचित खेती, कुओं और गहराई से पानी खींचने वाली प्रणालियों का उल्लेख मिलता है।

हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो (ईसा से 3000 से 1500 साल पूर्व) में जलापूर्ति और मल निकासी की बेहतरीन प्रणालियों के अवशेष मिले हैं।

ईसा से 321-297 साल पहले, कौटिल्य का अर्थशास्त्र बानगी है, जो बताता है कि तालाबों को राज्य की जमीन पर बनाया जाता था। समाज ही तालाब गढ़ने का सामान जुटाता था, जो लोग इस काम में असहयोग करते या तालाब की पाल को नुकसान पहुंचाते, उन्हें राज्य दंड मिलता। आधुनिक तंत्र की कोई भी जल संरचना 50 से 60 साल में दम तोड़ रही हैं जबकि चंदेल काल अर्थात् 1200 साल से अधिक पुराने तालाब आज भी लोगों को जिंदगी का भरोसा दिए हुए हैं। जाहिर है कि हमारे पूर्वजों की समझ कितनी सूझबूझ भरी एवं वैज्ञानिक थी। उन दिनों उन्नत जल विज्ञान और कुशल जलविज्ञानी का पूरा समाज था, जो मिट्टी और जलवायु की बेहतरीन समझ रखते थे।

यदि आजादी के बाद विभिन्न सिंचाई योजनाओं पर खर्च बजट व उससे हुई सिंचाई और हजार साल पुराने तालाबों को क्षमता की तुलना करें तो आधुनिक इंजीनियरिंग पर लानत ही जाएगी। अंग्रेज शासक चकित थे, यहां के तालाबों की उत्तम व्यवस्था देखकर। उन दिनों कुओं के अलावा सिर्फ तालाब ही पेयजल और सिंचाई के साधन हुआ करते थे। फिर आधुनिकता की आंधी में सरकार और समाज दोनों ने तालाबों को लगभग बिसरा दिया, जब आंख खुली तब बहुत देर हो चुकी थी।

तालाबों की साफ-सफाई

अभी एक सदी पहले तक बुंदेलखंड के इन तालाबों की देखभाल का काम पारंपरिक रूप से धीमर समाज के लोग करते थे। वे तालाब को साफ रखते, उसकी नहर, बांध, जल आवक को सहेजते-ऐवज में तालाब की मछली, सिंघाड़े और समाज से मिलने वाली दक्षिणा पर उनका हक होता। तालाब तो लोक की संस्कृति सभ्यता का अभिन्न अंग हैं और इन्हें सरकारी बाबुओं के लाल बस्ते के बदौलत नहीं छोड़ा जा सकता। असल में तालाब की सफाई का काम आज के अंग्रेजी इंजीनियरों के बस की बात नहीं है। तालाबों की सफाई और गहरीकरण अधिक खर्चीला काम नहीं है, न ही इसके लिए भारी भरकम मशीनों की जरूरत होती है। यह सर्वविदित है कि तालाबों में भरी गाद, सालों-साल से सड़ रही पत्तियों और अन्य अपशिष्ट पदार्थों के कारण ही उपजी है, जो उम्दा दर्जे की खाद है। रासायनिक खादों ने किस कदर जमीन को चौपट किया है? यह किसान जान चुके हैं और उनका रुख अब कंपोस्ट व अन्य देशी खादों की ओर है। किसानों को यदि इस खाद रूपी कीचड़ की खुदाई का जिम्मा सौंपा जाए तो वे सहर्ष राजी हो जाते हैं। उल्लेखनीय है कि राजस्थान के झालावाड़ जिले में ''खेतों मे पालिश करने'' के नाम से यह प्रयोग अत्यधिक सफल व लोकप्रिय रहा है।

तालाबों पर अतिक्रमण

गांव या शहर के रूतबेदार लोग जमीन पर कब्जा करने के लिए बाकायदा तालाबों को सुखाते हैं, पहले इनके बांध फोड़े जाते हैं, फिर इनमें पानी की आवक के रास्तों को रोका जाता है न भरेगा पानी, न रह जाएगा तालाब। गांवों में तालाब से खाली हुई उपजाऊ जमीन लालच का कारण होती है तो शहरों में कालोनियां बनाने वाले भूमाफिया इसे सस्ता सौदा मानते हैं। यह राजस्थान में उदयपुर से लेकर जैसलमेर तक, हैदराबाद में हुसैन सागर, हरियाणा में दिल्ली से सटे सुल्तानपुर लेक या फिर उ.प्र. के चरखारी व झांसी हो या फिर तमिलनाडु की पुलिकट झील, सभी जगह एक ही कहानी है। यदि सरकार तालाबों के संरक्षण के प्रति गंभीर है तो गत पांच दशकों के दौरान तालाब या उसके जल ग्रहण क्षेत्र में हुए अतिक्रमण हटाने, तालाबों के जल आगमन क्षेत्र में बाधा खड़ी करने पर कड़ी कार्यवाही करने, नए तालाबों के निर्माण के लिए आदि-ज्ञान हेतु समाज से स्थानीय योजनाएं तैयार करवाना जरूरी है और यह तभी संभव है जब तालाब विकास प्राधिकरण का गठन ईमानदारी से किया जाए। दुर्भाग्यपूर्ण है कि हमने नए तालाबों का निर्माण तो नहीं ही किया, पुराने तालाबों को भी पाटकर उन पर इमारतें खड़ी कर दीं। इस मुनाफे में उनके साझेदार बने राजनेता और प्रशासनिक अधिकारी। माफिया प्रशासनिक अधिकारियों और राजनेताओं की इस जुगलबंदी ने देश को तालाबविहीन बनाने में कोई कसर बाकी नहीं रखी।

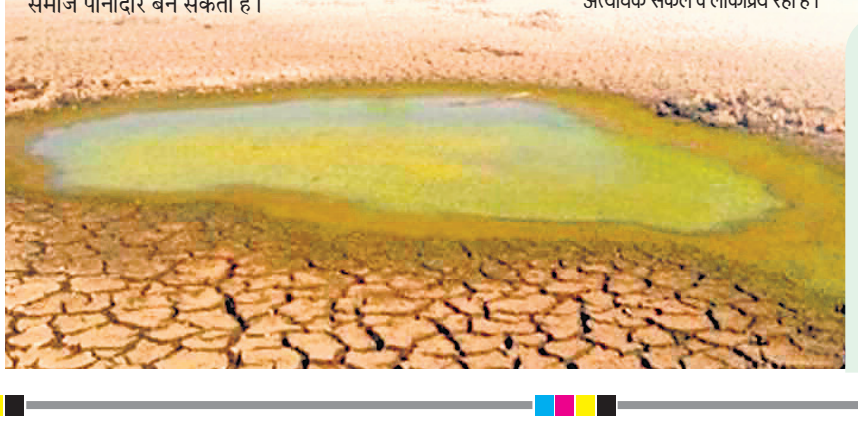

तालाबों का सर्वेक्षण

दो साल पहले केंद्र सरकार ने देश के सभी तालाबों का सर्वेक्षण करवा कर क्रांतिकारी काम किया। उसके बाद अमृत सरोवर योजना के तहत भी देश के कुछ तालाबों की तकदीर बदली है। यह समझना होगा कि जब तक सहेजे गए तालाबों का इस्तेमाल समाज की हर दिन की जल जरूरत के लिए नहीं होगा, तब तक समाज को इन तालाबों का जिम्मा नहीं सौंपा जाता, तालाब की समृद्ध विरासत को स्थापित नहीं किया जा सकता। समझना होगा कि न्यूनतम बरसात की दशा में भी प्रकृति हमें इतना पानी देती है कि सलीके से उसे सहेजें और खर्च करें तो सारे साल हर इंसान की जरूरत को आसानी से पूरा किया जा सकता है। समझना होगा कि यदि नदी में 365 दिन अविरल धारा बहती रहे, यदि तालाब में लबालब पानी रहता है तो उसके करीब के कुओं से पंप लगाकर सारे साल घरों तक पानी भेजा जा सकता है। ये तीनों जल संग्रह के माध्यम एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। यदि हर घर तक ईमानदारी से पानी पहुंचाने का संकल्प है तो ओवर हेड टैंक या ऊंची पानी की टंकी बनाकर उसमें अधिक बिजली लगाकर पानी भरने और फिर बिजली पंप से दवाब से घर तक पानी भेजने से बेहतर और किफायती होगा कि हर मुहल्ला-पुरवा में ऐसे कुएं विकसित किए जाएं जो तालाब, झील, जोहड़, नदी के करीब हों व उनमें साल भर पानी रहे। एक कुंए से 75 से 100 घरों को पानी सप्लाई का लक्ष्य रखा जाए व उस कुएं व पंप की देखभाल के लिए उपभोक्ता की ही समिति कार्य करे तो न केवल ऐसी योजनाएं दूरगामी रहेंगी, बल्कि समाज भी पानी का मोल समझेगा।

व्यंग्य

शॉपिंग बिना चैन कहां रे!

डॉ. आकांक्षा दीक्षित
लखनऊ

अनुपमा घर का काम निपटाकर बैठी ही थी कि फोन की घंटी बजी। फोन उठाया तो देखा कि सहेली रति का फोन है। चेहरे पर बड़ी सी मुस्कान के साथ फोन उठा लिया। उधर से आवाज आई,'डार्लिंग कहां हो यार! इतनी देर से क्या कर रही थी? फोन करती हो नहीं, उठाया क्यों नही? अनुपमा ने कहा, 'अरे, सांस तो ले लो फटाफट एक्सप्रेस, काम कर रही थी, भागते हुए आई हूं। बोल क्या बात है? रति ने कहा,'चल न साड़ी लेने चलते है, बहुत दिन हो गए, आज छुट्टी भी है। कहो क्या कहती हो? अनुपमा ने जवाब दिया कि 'बहन शरीर में विटामिन एस की कमी हो गई है, चैन-वैन भी उजड़ सा गया है,सपने भी गड़बड़झाला और अमीनाबाद के आ रहे है,पर अगला खौरियाएगा तो क्या किया जाएगा।' रति बोली, 'कौन जीजाजी, उनको हम संभाल लेंगे, मेरे सामने वो क्या बोलेंगे और विटामिन शॉपिंग की कमी घातक हो सकती है, हमारे तो गोलगप्पे की भी कमी हो गई है, इसलिए चार बजे तैयार रहना।' अनुपमा सोच रही थी, सही किया या नहीं, कुछ दिन पहले ही तो झगड़ा हुआ है। पतिदेव ने कहा कि 'तुम्हारी अलमारी से कपड़े गिरे जा रहे हैं, लेकिन आने बंद नहीं हो रहे, चाहती क्या हो। ये साड़िया पहनती तो हो नहीं, हर महीने जाती हैं।' अनुपमा ने भी कौन सा मुंह में दही जमाया था बोली, 'देखो जी! कपड़ों को कुछ मत कहना, हां नहीं तो अब हम रोज साड़ी में ही ऑफिस जाएंगे।' पति ओम ने उसे ऊपर से नीचे तक उसे देखा और कहा, 'तीन दिन भी लगातार पहन लो तो हम नाम बदल दे।' फिर क्या था अनुपमा ने लगातार चार दिन साड़ी ही पहनी।

चार दिन चैलेंज पूरा होने की खुशी में बढ़िया प्रमुदित, उल्लसित, उत्साहित अत्यंत प्रसन्न भाव से पति देव का नामकरण करने का सोचने लगी। मन ही मन दो शेखचिल्ली वाले और तीन मुंगेरी लाल के हसीन सपने भी देख डाले थे कि 'हाय! अब हम लिम्का बुक में भी आएंगे और क्या पता गिनीज बुक में भी छा जाए।' यहां तक देख डाला कि सनसनी वाले पंडित जी उसके नाम को फेमस कर रहे हैं, चैन से सोने वालों जाग जाओ, अपने घर से भाग आओ, ये देखिए ये है वो महान नारी जिन्होंने अपने पति का नामकरण कर दिया, कहीं देखा-सुना है ऐसा। फिर उसने अलग-अलग चैनल के हिसाब से स्पीच तैयार करके प्रैक्टिस भी कर ली कि जब फेमस हो जाएगी तो कैसे इंटरव्यू देंगी, यहीं नहीं साड़ियां भी सोच ली जो पहनी जाएंगी, किंतु कहानी ट्विस्टेड न हो तो कहानी कैसी,गजब हुई।

ये सब अभी ठीक से एन्जाय भी न कर पाई थी कि देखा सासू-मां बड़ी सी कैंची लिए जीने पर खड़ी उसकी ही राह देख रही है। अनुपमा के तो प्राण सूख गए,काटो तो खून नहीं, दिमाग ने काम करना बंद कर दिया फिर भी उसने बची-खुची हिम्मत जुटाकर सोचना शुरू कर दिया कि इनको उसके किस कांड या कारनामें की खबर लग गई। अचार अंदर रख दिया था, उनके कपड़े प्रेस करवा दिए थे,डस्टिंग भी कर दी थी,रह क्या गया? अब एक हो तो याद आए पूरी पिक्चर निकल गई पल्ले कुछ न पड़ा। सासू मम्मी के इस रौद्र अवतार के उसने केवल किस्से ही सुने थे कि इस अवस्था में तो उनके आगे ससुर जी समेत पूरा घर भी थर-थर कांपता है फिर यहां वो सबसे छोटी बहू, इस तुलना में कोई हैसियत ही नहीं थी। जैसे-तैसे चार-पांच जीना चढ़ी,आवाज तो उसकी निकली ही नहीं। सासू मम्मी ने गरजदार वाणी में कहा, "कहां है? कहां है?" अनुपमा ने मन ही मन कहा,"हाय दैया! क्या लाने को कहीं थी,जो हम भूल गए।" दिमाग पर जोर डाला तो नर्सरी की कविता तक याद आ गई,पर उन्होंने क्या कहा था ये तो याददाश्त से डिलीट हो गया था। अब दुर्गा जी का ही सहारा था। बड़ी कोशिश की कि "या देवी" से आगे कुछ याद आ जाए पर अर्गला, कवच, कीलक किसी की एक भी पंक्ति ने याद आने से इंकार कर दिया। डर के मारे जो चार जीना चढ़ी थी,तीन फिर से उतर गई। सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। याददाश्त, सोच, समझ सब धोखा दे जाते है भाई, जब साक्षात माता जी सामने हो तो कंठस्थ सप्तशती की माता रानी भी स्मरण शक्ति से गायब हो जाती है। उन्होंने फिर जोरदार लहजे में कहा,"सुनेन हय कि तुम्हरे पर निकरि आए है वेहैय कतरैय आयेन है, तुम्हार अतनी हिम्मत कि हमरे लरिका क्यार नाम बदल रही हौ। नीक-नीक नाम धरा रहैय, इ आयी है बड़ी बदलै वाली। लाओ कतरी तुम्हार पर।"' नहीं...

बस उसकी नींद खुल गई इतना भयानक सपना था कि पसीने-पसीने हो गई। देखा दो बजे थे रात के। वो तो बढ़िया है कि सपना सुबह का नहीं था वरना...। ये साइड इफेक्ट तो उसने सोचा ही नहीं था, अच्छा हुआ सपने में ही चेतावनी मिल गई। फिर भी पतिदेव से कह दिया कि, "देखो अबकी नाम नहीं बदल रहे पर आगे कहने से पहले सोच लेना।" हां उनको उसने सपना थोड़ी सुनाया, इतनी समझदारी तो बाकी ही थी। अब ये घटना या सपना चाट खाते-खाते रति को बता रही थी कि "दिल के अरमां एक झाड़ में झर गए... वो भी जो सपने में मिली।" रति ने कहा,"देखो! लड़ाई-झगड़ा, मान-मनौव्वल, रुठना-मनाना एक तरफ शापिंग,चाट और गोलगप्पे दूसरी तरफ। पलड़ा भारी तो दूसरा ही रहता है न। आखिर शॉपिंग बिना चैन कहां रे, फिर दोनों हंस दी।

कविता

क्यों कौवे होते हैं पुरस्कृत

सारे प्रश्न व्यर्थ हैं, जिनके
उत्तर नहीं व्याकरण सम्मत।

राजनीति की चौपालों में।
विरुदावलियां गाते चारण।
प्रस्तुत रोज यहां करते हैं।
चाटुकार कुछ नए उदाहरण।
हंसों का क्यों तिरस्कार है?
क्यों कौवे होते हैं पुरस्कृत?

साथ खड़े होते सुख-दु:ख में
लाभ-हानि की कर गणनाएं।
धर्म बन गया धन का लालच
रक्त पिपासु बनी तृष्णाएं।
नीति-मूल्य की टूटी छतरी
मांग रही क्यों बड़ी मरम्मत?

लोकतंत्र की परिभाषा में
दृष्टिकोण हैं सबके अपने
जो कहता रहता है राजा
मंत्र वही सबको हैं रटने।
ध्रुवीकरण की नीति-रीति से
पा जाता, क्यों कोई बहुमत?

कैसी कैसी चाल दुरंगी
चलते रहते कथित मनीषी,
जैसी बहती हवा देखते
करते रहते बहसें वैसी।
राष्ट्र भक्ति के सेमिनार में
जयचंदों के क्यों कर अभिमत?

डॉ. प्रशांत अग्निहोत्री
निदेशक,रुहेलखंड शोध संस्थान, शाहजहांपुर

पर्यावरण

जटिल परिस्थिति आ गई, बढ़ा
सूर्य का ताप
डरे-डरे सब लोग हैं, करें प्रभू
का जाप।

व्याकुल भारत की धरा, देख
ज्येष्ठ की आग
भीतर हैं सिमटे सभी, भूले सुख
का राग।

भट्टी सी धधके धरा, अंबर अग्नि
समान।
विह्वल पशु पक्षी यहां, व्याकुल
है इंसान।।

देख परिस्थिति आज की बात
कहूं ये खरा।
मानव के ही कृत्य से हो गई
आग धरा।।

केवल अपना सुख दिखा दिखा
नहीं कुछ और।
कंक्रीट बिछते गए किया नहीं
कुछ गौर।।

एसी कूलर व्यर्थ हैं व्यर्थ हुए
हैं छांव।
भेद सभी अब मिट गए शहर हुए
हैं गांव।।

सुबह दोपहर सी हुई हुई दोपहर
आग।
शाम बीतती ही नहीं रात कटे
है जाग।

दिन कटना मुश्किल हुआ रातें
भार समान।
सजा भुगत दोनों रहे ए पशु हों
या इंसान।।

धीरे-धीरे चल रही जीवन
रूपी रेल।
तपते मौसम ने किया मानव घर
को जेल।।

प्रदीप बहराइची
बहराइच

पागल पथिक

हर मर्ज का इलाज,
नहीं है अस्पतालों में।
कुछ मर्ज ठीक होते हैं,
दोस्त के मिल जाने में।
किसी प्रिय की कमी,
ज़ब महसूस होती है।
समझो उसकी मौजूदगी,
अब बहुत जरूरी है।
चाहता ऐसा होता है,
जिसे चाहा दूर होता है।
चाहत अजीब होती है,
न आंखे न दरवाजा बंद करती है।
प्यार मे पागल पथिक,
खोजता है पथ भ्रमित।
शायद चाह है असीमित,
पाकर भी है व्यथित।

डॉ. सुनील कुमार तिवारी
कानपुर

वहीं पर लौट जाना है

यहां तकदीर के रुख को कहां
कोई जान पाया है।
किसके हैं कितने चेहरे, क्या
कोई पहचान पाया है।।
कभी भी छल कपट प्रपंच के,
कहीं कोई बीज मत बोना।
सत्य को गुमराह करके, कब
कौन यहां राज पाया है?
ताकत और अहंकार क्या है यह
सब वक्त से पूछो?
पल में हो जाता है सब खाक,
वक्त कोई जान पाया है।।
कभी गुरुर मत करना खुद पर,
बड़ी बेअदब है यह मौत।
कहां किस वक्त आ जाए, कहां
कोई जान पाया है।।
बड़ी थी जिद कि मुझे तो,यह
पूरा जहान जीतना है।
पलभर में स्वप्न हो जाते हैं
खाक, यहां वीरान पाया है।।
इंसानियत, ईमान, सेवा धर्म है
धरती पर सबसे बड़ा।
राख के ढेर में तब्दील इक दिन,
जिस्म हो जाना है।।
जीने आए हो तो जी लो,मौज से
यहां हर एक पल।
जहां से आएं हैं हम एक रोज,
वहीं पर लौट जाना है।।

डॉ.रितु कीर्ति
बरेली

कहानी

धुंध की परत

ऑफिस में हर किसी को खुश देखना बॉस की सीरत में नहीं था,बॉस खुद तय करता था कि ऑफिस में कौन खुश रहे और कौन नहीं,कौन कितनी तरक्की करें,कौन नहीं। विजय अपने बॉस का एक 'अधीनस्थ अधिकारी' था, बॉस उसे चाहे-अनचाहे प्रताड़ित किया करता था,अन्य स्टाफ की तुलना में विजय को ऐसा काम सौंपा जाता कि उसे मेहनत तो खूब करनी पड़े,लेकिन कैरियर की तरक्की में उसे लाभ बिल्कुल न मिले। इतना ही नहीं,बाकि स्टाफ को बॉस, हवाई जहाज से सरकारी दौरे पर भेजता था,लेकिन विजय को कहा जाता कि तुम ट्रेन से जाओ,ऑफिस की कार से न जाकर 'बस' से जाओ। विजय की विशिष्टता और वरिष्ठता को बॉस ने नजरअंदाज कर रखा था,कायदे-कानूनन जो लाभ विजय को मिलना चाहिए था, वह विजय के जूनियर सहयोगी को मिल रहा था। विजय, उच्च अधिकारियों से शिकायत भी नहीं कर सकता था, सभी उच्च अधिकारी और बॉस की व्यावहारिक प्रवृत्ति एक जैसी ही थी। मुख्यालय से जो भी उच्च अधिकारी आए, बॉस उन्हें आलीशान होटल में ठहराता, उनकी पूरी आवभगत करता, सरकारी पैसे से महंगे-महंगे उपहार खरीदकर उनको भेंट करता,इसलिए वे सब बॉस के गुलाम थे।

डा. बी.पी.सिंह
भाकृअनुप

विजय का साथ देने वाला,उसकी आप-बीती सुनने वाला,विजय की परेशानियों को समझने वाला कोई नहीं था,ऑफिस में। दरअसल विजय एक बेहद गरीब और ग्रामीण परिवार से ताल्लुक रखता था,वह समाज की निम्न जाति से था,उसने गरीबी को जिया था, जिस कष्ट के साथ मां-बाप ने पढ़ाया था,उन कष्टों को विजय अच्छी तरह समझता था,उसके पिता भी एक दिहाड़ी मजदूर थे। अपने परिवार की पीढ़ी का पहला पढ़ा-लिखा एक जोशीला युवा था,विजय। बहुत कर्मठ, समय का पाबंद, सौंपे गए कार्य को बहुत ही कुशलता से अंजाम देने की कला और क्षमता थी,एक आकर्षक व्यक्तित्व था उसमें। विजय के यही गुण,बॉस को अखरते थे। बॉस ने विजय को कभी 'सेकेंड लाइन' बनने ही नहीं दिया,उसके प्रतिभाशाली व्यवहार से बॉस को असुरक्षा महसूस होती, बॉस को डर लगता था कि अच्छा कार्य करने से विजय का 'नाम' हो जाएगा, सिस्टम की नजरों में आ जाएगा। मानसिक विकारों से ग्रस्त बॉस हमेशा इसी उधेड़बुन में लगा रहता कि विजय ऊंचे ओहदे तक किसी भी हालत में नहीं पहुंचना चाहिए। विजय कभी-कभार अपने सहकर्मियों से बॉस के भेदपूर्ण व्यवहार की चर्चा भी करता तो उन सहकर्मियों का हास्यास्पद रवैया रहता, वे उसकी मजाक उड़ाते, अंदरूनी तौर पर वे भी नहीं चाहते थे कि विजय और बॉस के बीच अच्छे संबंध रहे जिसका उन्हें जरूरत से ज्यादा फायदा मिल रहा था। बॉस ऑफिस में एक ही मुद्दे पर कार्य करता था कि जैसे भी हो विजय को 'हतोत्साहित' रखना है और दूसरों को आगे बढ़ाना है। हद तो तब हो गई जब बॉस ने हजारों किमी. की सरकारी यात्रा के लिए भी विजय को ट्रेन से भेजा और बाकी के समकक्ष कई अधिकारियों को हवाई जहाज से भेजा। बॉस ने जान-बूझकर, ट्रेन का कंफर्म टिकट न होते हुए भी, यह दिलासा दिया कि " मैं हूं ना, मैं टिकट कंफर्म कराऊंगा" तुम ट्रेन से जाओ। इस यात्रा में विजय के पास "4-5 नग" ऑफिस का सामान था और एक बैग उसका स्वयं का भी था। इस काम में विजय के सहयोग के लिए कोई सहायक कर्मचारी भी नहीं भेजा गया। तीन सौ किमी. की दूरी सरकारी 'बस' से तय करने के बाद,आगे की ट्रेन-यात्रा के लिए समय से दो घंटे पहले ही दिल्ली रेलवे स्टेशन पहुंच गया,वहां पहुंचकर विजय सामान सहित प्लेटफार्म के वेटिंग रूम मे बैठ गया। सामान को वेटिंग रूम में छोड़कर, टिकिट की स्थिति को जानने के लिए विजय बार-बार रिजर्वेशन चार्ट देखने जाए और दोड़कर जल्दी से वापस आ जाए, यह सोचकर कि कहीं सामान चोरी न हो जाए। उधर बॉस ने दिलासा दिया ही था की वह ट्रेन के 'वेटलिस्ट टिकट' को कंफर्म करा देगा। अंत में रिजर्वेशन चार्ट चस्पा हुआ और अपने टिकट का विवरण न पाकर, विजय हताश और परेशान हो गया, यह वही हुआ जैसा 'विजय' को आभास था। फिर भी विजय ने सोचा कि ट्रेन को प्लेटफार्म पर लगने दो, टी.टी. से बात करके, क्या पता, बात बन जाए और ट्रेन में सीट मिल जाए। थोड़ी देर बाद ट्रेन भी प्लेटफार्म पर आ गई,लेकिन टी.टी. ने साफ-साफ कह दिया कि ट्रेन बिल्कुल फुल है एक भी सीट खाली नहीं है और 'राजधानी ट्रेन' में तो वेटिंग लिस्ट के यात्री बिल्कुल नहीं बैठ सकते,आप काउंटर पर जाकर अपना टिकट कैंसिल करा लो। स्थिति नाजुक थी,सरकारी दौरा होने के कारण गंतव्य स्थान पर पहुंचना भी जरूरी था, स्टेशन पर ही रात हो चुकी थी, साथ में ऑफिस का सामान भी बहुत ज्यादा था, हवाई यात्रा के लिए जेब में ज्यादा पैसे भी नहीं थे। विजय ने 'बॉस' को फोन कर स्थिति से अवगत कराते हुए कहा कि "आपने मेरे साथ ऐसा क्यों किया? अब मैं क्या करूं, मेरी जेब में पैसे भी नहीं है। यह सुनकर-बॉस

की तरफ से कोई जवाब नहीं था, बॉस तो आखिर यही चाहता था। विजय ने सोचा कि अगर वह अपनी ड्यूटी नहीं करेगा तो बॉस उसे 'मेमो' देगा, मूल्यांकन में नकारात्मक टिप्पणी कर देगा जिसका कैरिएर पर खराब असर पड़ेगा। थोड़ी देर बाद, सोच–विचारकर, दिल्ली रेलवे स्टेशन से ही विजय ने दिल्ली में नौकरी कर रहे बचपन के मित्र को फोन किया और आपबीती सुनाई। वह मित्र,विजय को रात में अपने घर ले गया, मित्र ने हवाई यात्रा का टिकट भी खरीदकर विजय को दे दिया और सुबह होते ही कुछ नगदी देकर विजय को एयरपोर्ट पर पहुंचा दिया। उसके बाद विजय, हवाई जहाज से दो घंटे में ही अपने गंतव्य स्थान पर पहुंच गया। ऑफिस के कई अफसर हवाई जहाज से अगले दिन पहुंचे,वो भी बैगर किसी सरकारी सामान के,बॉस भी यही चाहता था की पूरा सामान 'विजय' ही लेकर जाए और वह खूब पेरशान हो। वहां दूसरे शहरों से आए अधिकारियों को भी अब तक विजय की दुश्वारियों का पता चल चुका था कि विजय अपने ऑफिस से अकेला आया है, उसकी मदद के लिए उसके साथ कोई भी सहकर्मी नहीं है, उन्होंने कहा कि 'ये तो खुल्लम-खुल्ला भेदभाव है और बदतमीजी भी है',आप उच्च अधिकारियों से शिकायत क्यों नहीं करते बॉस की।

इस यात्रा से वापस आने पर विजय की इस यात्रा का मर्म,ऑफिस में कोई सुनने वाला ही नहीं था,पढ़ा-लिखा अधिकारी 'विजय' अपने ही ऑफिस में पराया और बेगाना था, उसे एहसास कराया जाता कि तुम छोटी जात के हो और वह उस ऑफिस का हिस्सा नहीं है जिसके बाकी सब है। विजय के ऑफिस के सहयोगी जो दोस्ती का दम भरते थे, वे भी बॉस की हां-में-हां मिलाते और विजय को ऑफिस में अलग-थलग रखते। विजय को हमेशा बाहर के काम दिए जाते ताकि वह तरक्की भी न कर पाए और बाहर के कामों में ही उलझ कर रह जाए और उसका परिवार भी पेरशान रहे, ऑफिस में विजय के खिलाफ एक षडयंत्र था,यह। दो साल बाद फिर से विजय को एक और मीटिंग में हिस्सा लेने के लिए दूसरे शहर जाना पड़ा, दूरी थी 600 किमी। इसमें एक तरफ से जाने के लिए तो ट्रेन का टिकट कंफर्म था,लेकिन वापसी का टिकट वेटिंग में था। विजय को उम्मीद थी कि टिकट कंफर्म हो जाएगा,जो स्वतः ही रद्द भी हो गया। इस मीटिंग में विजय के ऑफिस का एक अधीनस्थ अधिकारी भी साथ गया था। ट्रेन का ई-टिकट उसका भी कंफर्म नहीं हो पाया, लेकिन वह मोटी रकम खर्च कर हवाई जहाज द्वारा दो शहरों से गुजरता हुआ वापस आया,उसे विश्वास था कि उसका सुपर बॉस, उसके अपने बॉस 'विजय' को बाईपास कर,हवाई जहाज की यात्रा के टिकट का भुगतान करा देगा। हवाई जहाज से 'विजय' भी आ सकता था,लेकिन वह जानता था कि उसका 'बॉस' हवाई जहाज के टिकट का भुगतान बिल्कुल नहीं होने देगा।

ऑफिस का आलम यह था कि काम 'विजय' करता, लेकिन उसका श्रेय किसी और को मिलता। नए काम की 'पहल' विजय करता,लेकिन वह काम किसी और को सौंप दिया जाता। ऑफिस में धुंध की परत सी जम गई थी। वह परत दिखती सबको थी,लेकिन उसे हटाता कोई नहीं था। विजय भी उस धुंध की परत में कहीं दब कर रह गया। उस ऑफिस में, विजय को छोड़कर सभी मस्त थे,क्योंकि किसी के साथ 'विजय' जैसा भेदभाव नहीं हो रहा था। विजय की हंसती-खेलती जिंदगी को बॉस ने नरक बना दिया था। बॉस विजय की गरीब पृष्ठभूमि और उसके हौसलों के साथ खेल रहा था। विजय को मानसिक तौर पर कमजोर करने में बॉस कोई कमी नहीं छोड़ता था। विजय के हर प्रस्ताव को नकारना की बॉस की आदत में शुमार हो गया था,लेकिन कोई किसी की किस्मत को अपनी मुट्ठी में कब तक बंद कर सकता है? वो नीली छतरी वाला भी देखता है,उसके यहां न्याय में देर हो सकती है,लेकिन अंधेर कभी नहीं हो सकती।

समय ने करवट बदली, बॉस के खासम-खासों ने ही बॉस को खरीद-फरोख्त जैसे भ्रष्टाचार में फंसाकर एक बड़ा संकट खड़ा कर दिया। हाई कमान ने संज्ञान लेकर बॉस का स्थानातंरण कर विजय को ऑफिस की कमान सौंपकर उसे ऑफिस का 'बॉस' बना दिया। अब विजय, बॉस का भी बॉस बन गया था,बाकि स्टाफ भी विजय की चाटुकारी में लग गए थे,जो ऑफिस विजय के लिए कभी नरक बन गया था वह अब स्वर्ग नजर आने लगा। विजय ने सभी स्टाफ के साथ मिलकर मन से खूब काम किया और ऑफिस को ऊंचाइयों पर लाकर खड़ा कर दिया, उसने किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं किया। किसी को परेशान नहीं किया,बल्कि परेशानी में सभी स्टाफ के साथ खड़ा नजर आया। विजय और उसकी टीम को अच्छे काम का पुरुस्कार भी मिला। विजय के बूढ़े और अनपढ़ मां-बाप भी अपने बेटे की तरक्की से बहुत खुश थे।

किस्सा

कवि बलबीर सिंह 'रंग', शैलेन्द्र और कविता पाठ

एक मित्र ने बातचीत में पुराने जमाने के फक्कड़ कवि बलबीर सिंह 'रंग' का नाम लिया तो मुझे उनके दो किस्से याद आ गए। सन् 1919 में एटा में जन्मे और 1936 में पहली बार कासगंज में हुए एक कवि सम्मेलन में कविता पाठ करने वाले 'रंग' जी का फिरोजाबाद से गहरा संबंध रहा,लेकिन उनकी प्रसिद्धि का आलम ऐसा था कि कह सकते हैं- 'ऐसा कौन सा शहर था जो बलबीर सिंह' रंग 'के बहु रंगों से नावाकिफ था।' इस संदर्भ में रंगजी की लिखी चार पंक्तियां -

पग धरने का ठौर नहीं है/धूनी
किसके द्वार रमाऊं/ मेरे चलने की
आदत है/ कौन नगर की डगर न
जाऊं।

डॉ. अशोक बंसल
मथुरा

उस घुमंतु राष्ट्र भक्त कवि के दो किस्सों में एक फिरोजाबाद का है। सन् 1940 में फिरोजाबाद में राष्ट्रीय आंदोलनों की धूम थी। पं. गोविंद बल्लभ पंत फिरोजाबाद में आयोजित एक सभा की अध्यक्षता कर रहे थे। करीब 30 हजार लोगों का हुजूम था। इस सभा में संचालक ने बलबीर सिंह 'रंग' को तरुण कवि कह कर पुकारा तो सभा स्थल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। दुबले-पतले नौजवान बलबीर सिंह 'रंग' ने उस जमाने की अपनी प्रिय व लोकप्रिय कविता 'छेड़ा है इंकलाब का गंभीर तराना' को सुनाना शुरू किया तो श्रोताओं में जोश भर गया। पं. गोविंद बल्लभ पंत को रंगजी की कविता अद्भुत लगी,उन्होंने तत्काल अपनी घड़ी उतारी और कवि को भेंट कर दी।

दूसरा दृश्य मथुरा में सन् 1944-45 में धौली प्याऊ बस्ती में आयोजित एक कवि सम्मेलन का है। यह किस्सा रंगजी ने मेरे मित्र कवि अनिल गहलौत को सुनाया था। कवि रंग जी इस सम्मेलन की अध्यक्षता कर रहे थे। मंच पर संचालक पहले से निर्धारित कवियों को बारी-बारी से बुलाकर कविता पाठ करा रहा था। कुर्ता-पाजामा पहने एक दुबला-पतला लड़का हाथ में अपनी डायरी थामे मंच के एक कोने में बैठा था और संचालक को स्वयं कविता-पाठ करने की विनती कर रहा था। संचालक उस लड़के को कनखियों से देखता और आंख मिलते ही आंख फेर लेता। इस दृश्य को अध्यक्ष बलबीर सिंह 'रंग' ने देख लिया और मौका मिलते ही संचालक को उस बिन बुलाए कवि से कविता पाठ कराने का आदेश दिया। जब उस अनजान कवि ने काव्य पाठ किया तो सभा स्थल तालियों से गूंज उठा। श्रोताओं में एक अंग्रेज था,जो अपनी दो लड़कियों के साथ हिंदी कवि सम्मेलन का लुफ्त लेने आया था। कविता समाप्त होने पर दोनों लड़कियां मंच पर गईं और उस कवि के 'ऑटोग्राफ' लिए। यह कवि आगे चलकर बॉलीबुड का अमर गीतकार शैलेन्द्र के नाम से मशहूर हुआ।

बलबीर सिंह 'रंग' जब भी मुंबई जाते,वे शैलेन्द्र के घर 'रिमझिम' में रुकते। शैलेन्द्र को डायरी लिखने का शौक मथुरा में बिताए बचपन से था। इस डायरी के एक पन्ने पर मथुरा के इस कवि सम्मेलन में कविता पाठ करने और दो लड़कियों द्वारा 'ऑटोग्राफ' लेने की घटना दर्ज है और शैलेन्द्र की यह डायरी मुंबई में उनके उनके बेटे दिनेश की सबसे प्रिय धरोहर है।

लघुकथा

नेताजी की रैली

शहरी इलाकों से विलुप्त होती हरियाली चिंता का विषय है। जब से ए.क्यू.आई. इंडेक्स आया है,आम आदमी प्रदूषण के स्तर को आंकने लगा है। पेड़-पौधों में शहर के प्रदूषण को सोखने की अद्भुत क्षमता होती है। इसलिए स्मार्ट सिटी के शहरी निकाय ग्रीन कवर को बढ़ाने के लिए खूब काम कर रहे हैं। खाली स्थान में बहुत तेजी से वन उगाने की जापानी तकनीक अपनाई गई है। पिछले पर्यावरण दिवस में वैज्ञानिक अकीरा मियावाकी की इस पद्धति से जंगल लगाने का उद्घाटन सांसद जी ने किया था। एक चयनित स्थान पर लगभग एक हजार पौधों का सघन रोपण किया गया,वे पेड़ तेजी से बढ़ रहे थे।

अतुल मिश्र
डिप्टी मैनेजर (इफको) बरेली

चूंकि यह एक चुनावी वर्ष था तो नेताओं का आवागमन लगा ही रहता था। अब वो समय तो नहीं रहा कि राजनीतिक पार्टियां कहीं भी अपनी रैलियां मुफ्त में आयोजित कर लें। ऐसे कार्यक्रम निजी खर्चे पर अनुमति लेकर ही किए जा सकते हैं। सरकार भी अपने कामों का जनता में प्रचार करने के लिए बड़े-बड़े आयोजन करती ही रहती है। इसी पखवाड़े में एक बड़े नेताजी का भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। जाहिर सी बात है कि पूरा सरकारी तंत्र व्यवस्था में लगा हुआ था। लाखों की भीड़ को जुटाना और उसे संभालना कोई मामूली काम नहीं। ऐसा स्थल चुना जाना था जहां भीड़ सर्वाधिक हो सके। स्थानीय नेताओं ने मियावाकी जंगल को उपयुक्त पाया, लेकिन उस पर उगाए गए हजारों छोटे-बड़े पेड़ों के चलते यह संभव नहीं था। सत्ता और प्रशासन की अपार शक्तियों के आगे इन पेड़ों की भला क्या औकात? दो दिन में सारे पेड़ काटकर समतल मैदान तैयार हो गया। आयोजन खूब सफल रहा। अगले पर्यावरण दिवस में फिर से पेड़ लगाए जाएंगे।

समीक्षा

बेचैन करती कविताएं: मुरारी की चौपाल

ऐतिहासिक नगरी संभल इन अर्थों में विशेष रूप से सौभाग्यशाली रही है कि न केवल यहां का मुगलकालीन इतिहास समृद्ध रहा है वरन यहां के राजनीतिक परिदृश्य ने भी यहां की पहचान को देशभर में नई ऊंचाइयां दी हैं। इसके अतिरिक्त सींग और हड्डी पर अपनी हस्तशिल्प कला से विश्वस्तर पर ख्याति अर्जित करने वाले संभल को यहां के शायरों और कवियों ने भी अपनी रचनाधर्मिता से साहित्यिक रूप से प्रतिष्ठित करने का महत्वपूर्ण काम किया।

इन्हीं रचनाकारों में एक महत्वपूर्ण नाम अतुल कुमार शर्मा का है जिनकी कविताएं विभिन्न समवेत संकलनों और पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से देश-भर में चर्चित होने के साथ-साथ सराहना भी प्राप्त कर रही हैं। हाल ही में शर्माजी की कविताओं का प्रथम संग्रह 'मुरारी की चैपाल' शीर्षक से आया है जिसमें 54 छंदमुक्त कविताओं को संग्रहीत किया गया है। हिन्दी के चर्चित कवि अतुल कुमार शर्मा की कविताओं से गुजरते हुए भी यही महसूस होता है कि उनके सृजन लोक में जीवन-जगत से जुड़ा हर छोटा-बड़ा परिदृश्य यहां-वहां चहलकदमी करता हुआ दिखाई दे जाता है। साथ ही ये कविताएं भिन्न-भिन्न विषय-संदर्भों में गंभीरतापूर्वक अपना मंतव्य रखते हुए पाठकों को मनन करने पर विवश करने में सफल रही हैं।

समसामयिक संदर्भों की व्यंजना को नितांत टटके ढंग से कविता में कैसे प्रस्तुत किया जाना चाहिए,यह देखने और सीखने के लिए संग्रह की एक रचना देखिए-"धरने पर बैठे/किसानों के तंबुओं की तरह/नहीं होती हैं कविताएं/कि सरकार की सख्ती और/हठधर्मिता के सामने/यूं ही उखड़ जाएं/या फिर तूफानों में/उजड़ जाएं/जंगलों की तरह/या जल जाएं/घास-फूस के छप्परों-सी/या दब जाएं/ऑफिस की फाइलों-सी..."समीक्ष्य कृति 'मुरारी की चैपाल' की कविताओं को पढ़कर यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि ये कविताएं गढ़ी या मढ़ी हुई नहीं हैं। ये कविताएं कवि के आंखिन देखी और भोगे हुए यथार्थ के ही शब्दचित्र हैं जिनमें उन्होंने अपनी भावभूमि पर अपनी बेचैनी को बेहद संवेदनशील ढंग से अभिव्यक्त करते हुए चित्रित किया है।

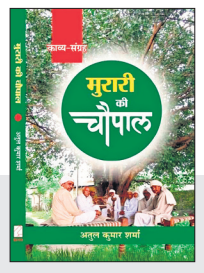

समीक्ष्य कृति - 'मुरारी की चैपाल' (काव्य संग्रह)
रचनाकार- अतुल कुमार शर्मा,
प्रकाशन वर्ष - 2023
प्रकाशक - आस्था प्रकाशन गृह, जालंधर (पंजाब)
मूल्य- रु0 295/- (पेपर बैक)
समीक्षक- योगेन्द्र वर्मा 'व्योम' मुरादाबाद

हिजाब

सीओ सिटी विनोद सिंह बेहद चिंता में बैठे थे, तभी उनके सामने सब इंसपेक्टर मनीषा शाक्य जय हिन्द करते हुए प्रकट हुईं। "जय हिंद आइए-आइए! मनीषा जी बैठिए-बैठिए, विनोद सिंह ने सामने पड़ी कुर्सी की ओर बैठने का इशारा किया।

मनीषा उनके माथे पर खिंची चिंता की लकीरों को पढ़ते हुए बोलीं-"क्या बात है सर,बहुत चिंता में लग रहे हैं"। विनोद सिंह गम्भीर स्वर में बोलें-"क्या बताएं लग रहा सारी इंसानियत मर रही है। कम्पलैन आई है,रामावती कालेज के आस-पास शोहदों ने लड़कियों को आना-जाना दूभर कर रखा है। तुम तो शोहदों को सबक सिखाने के लिए काफी मशहूर हो,अब तुम्हीं कुछ करो"। मनीषा-"सर आप चिंता न करें। आज ही उन टपोरियों का कुछ इंतजाम करती हूं"। फिर घंटे भर बाद रामावती कालेज के सामने सादे लिबास में हिजाब पहने एक लड़की बड़ी नजाकत से चली जा रही थी,उसके पीछे-पीछे,कुछ शोहदे फब्तियां कसते हुए चल रहे हैं। तभी अचानक वह एकदम से पलट कर मुड़ी, फौरन अपने चेहरे का हिजाब हटाया और आग्नेय नेत्रों से उन शोहदों को देखा। कयाकल्प... सारे शोहदे उसका रोबदार गुस्सैल चेहरा, देखकर फुर्र हो गए।

सुरेश सौरभ
लखीमपुर खीरी

यात्रा वृत्तांत

नेपाल में हिमालय की सुदूर और शुष्क सुंदरता की झलक

नेपाल और भारत के बीच बिना वीजा के आवाजाही है। तराई के इलाके के लोगों का रोजी-रोटी का संबंध काठमांडू की तुलना में भारत से कहीं ज्यादा है। 1950 में भारत और नेपाल के बीच हुई शांति और मैत्री संधि को भी दोनों देशों के रिश्तों में अहम माना जाता है। हालांकि नेपाल दशकों से इस संधि की समीक्षा चाहता है, लेकिन भारत तैयार नहीं है। नेपाल का कहना है कि भारत ने ये संधि तब की थी, जब नेपाल में राणाशाही थी। नेपाल का तर्क है कि अब नेपाल एक लोकतांत्रिक गणतंत्र है और सारी संधियां गणतंत्र के हिसाब से ही होनी चाहिए।

शैलेन्द्र प्रताप सिंह
से.नि., पुलिस महानिरीक्षक

मेरी इस यात्रा का उद्देश्य मुख्यतः जोमसोम और मुक्तिनाथ जाने का था, जो पोखरा से उत्तर में है। इलाका कठिन है और अनुमति लेकर जाना पड़ता है। पहले यह इलाका हेलीकॉप्टर से संपर्क में था, पर अब रोड बन रही है, कहीं-कहीं बन गई है, किसी तरह पहुंचा जा सकता है। हम सब सायं के पहले ही पोखरा से चलकर लोवर मुस्तंग घाटी आ गए जिसका मुख्यालय जोमसोम में है। हम जोमसोम से पहले ही एपल फार्म इको हिल रिजोर्ट में रुके। अपनी शुष्क जलवायु और शक्तिशाली झोकों के लिए प्रसिद्ध, इस घाटी को प्यार से "हवादार घाटी" के रूप में जाना जाता है।

पोखरा से यहां तक आने के लिए करीब 175 किमी का सफर तय करना पड़ा जिसमें करीब 125 किमी तो अच्छा है, पर 50 किमी काफी कष्टकारी लगा। रोड बन रही है, पर इस प्रसिद्ध घाटी और मुक्तिनाथ आने के लिए कुछ तो कष्ट उठाना ही पड़ेगा। रास्ते में तीन दर्शनीय स्थल भी मिले, बागलुंग के पास करीब 560 मीटर का सस्पेंशन ब्रिज देखने लायक है। यह दुनिया का दूसरे नंबर का लंबा ब्रिज है।

तातोपानी का प्राकृतिक हाट स्प्रिंग और थोड़ा पीछे ही रूप से में एक अच्छा दर्शनीय झरना मिला। यह एक विशाल झरना है जिसके चारो ओर बहुत ही शानदार नजारा है। यह काली गंडकी नदी के ठीक बगल में और इस जगह से गुजरते हुए आपको कुछ बेहतरीन रोमांच का अनुभव होता है। मुतंग घाटी का यह इलाका प्रसिद्ध अन्नपूर्णा सर्किट और ऊपरी मस्तंग क्षेत्र के ट्रेक में एक लोकप्रिय स्थान है। यह ट्रेकर्स को हिमालय की सुदूर और शुष्क सुंदरता की झलक प्रदान करता है। हमारा रिजार्ट माउंट के तल पर स्थित है। यह क्षेत्र पश्चिमी नेपाल के गंडकी प्रांत में है। धौलागिरी और नीलगिरी की ऊंची चोटियां काली गंडकी नदी के किनारे बसे शहर की पृष्ठभूमि बनाती है, जो जोमसोम के बीचो-बीच से बहती है। काली गंडकी के किनारों पर शालिग्राम नामक काले जीवाश्म पत्थर पाए जा सकते हैं, जिन्हें हिंदू संस्कृति में भगवान विष्णु का प्रतीक और अनुस्मारक माना जाता है। माना जाता है कि ऐसे पत्थर केवल काली गंडकी में ही पाए जाते हैं और हिंदुओं द्वारा उन्हें पवित्र माना जाता है। जिस रिजार्ट में हम रुके है वह एस तुलाचन जी का है, जो स्वयं थकाली है। उनसे बात हुई। यह घाटी मुख्यतः थकाली लोगों की है, जो बुद्धिस्ट हैं। उनके रिजार्ट पर बुद्धिस्ट और थकाली झंडे लहरा रहे हैं। कमाल की काफी पी गई और कमाल की ही एपल पाई खाई। आसपास की चोटिया बर्फ से ढकी हैं। दिव्य स्थान।

सुबह हम अपने रिजार्ट से मुक्तिनाथ मंदिर के लिए चल पड़े। पहले मारफा और फिर जोमसोम कस्बा (मुस्तांग घाटी का मुख्यालय) पड़ा। जोमसोम से गुजरने वाला रास्ता काली गंडकी नदी के किनारे-किनारे से होकर गुजरा। यहां एक तरफ अन्नपूर्णा पर्वत श्रृंखला है और दूसरी तरफ धौलागिरी है।

मुक्तिनाथ जोमसोम से लगभग 25 किमी दूर है। रास्ते में एक कस्बा कागबेनी भी दिखाई दिया। सर्द रेगिस्तान में नदियों के किनारे हो रही खेती देखकर सुखद लगा। जोमसोम से ठंडे रेगिस्तान का बहुत ही भव्य, सुंदर इलाका देखने को मिला जो लेह लद्दाख और लाहुल स्पीती की याद दिला रहा था।

खाना खजाना

ड्राई फ्रूट कचोरी

गुजरात की सबसे ज्यादा खाने और पसंद की जाने वाली ड्राई कचोरी जो ड्राईफ्रूट और अन्य मसालों के संगम से बनती है आपके चाय के स्वाद को कई गुना बढ़ा देती है। स्वाद में तीखी, मीठी और चटपटी कचोरी एक से दो महीने तक स्टोर कर सकते हैं। ये कचोरी राजकोट में कई कंपनियां बनाकर दूसरे देशों में निर्यात भी करती हैं, क्योंकि इस कचोरी के भारतीय दीवाने पूरे विश्वभर में हैं।

प्रीतम कोठारी
फूड ब्लॉगर

सामग्री

- दो कप मैदा
- 6 टेबल स्पून तेल
- 1 टेबल स्पून धनिया साबुत
- 1/2 टेबल स्पून जीरा
- 1 टेबल स्पून सौंफ
- 2 टेबल स्पून तिल
- 4-5 लौंग
- 2 टेबल स्पून लाल मिर्च पाउडर
- 1/4 टेबल स्पून हल्दी पाउडर
- 1/2 टेबल स्पून गरम मसाला
- 2 टेबल स्पून चीनी
- 1 चुटकी हींग
- 1/2 कप मिक्सचर
- 1/2 कप भूनी मूंग दाल
- नमक स्वादानुसार
- तलने के लिए तेल
- 3 चम्मच इमली का पल्प/ मीठी चटनी
- 2 टेबल स्पून काजू, किशमिश

बनाने की विधि

सबसे पहले मैदे में गुनगुना तेल मिलाएं। अब स्वादानुसार नमक डालकर हल्के गर्म पानी से मीडियम आटा गूंथ लें। स्टफिंग के लिए धनिया, तेल सौंफ, जीरा और लौंग को दो-तीन मिनट के लिए धीमी आंच पर रोस्ट कर लें। ठंडा होने पर इसे एक मिक्सी के जार में डालें। इसमें नमक, लाल मिर्च पाउडर, हल्दी पाउडर, गरम मसाला, चीनी और हिंग डाल करके फाइन पाउडर बना लें। हमारा कचोरी बनाने के लिए सूखा मसाला तैयार है। अब मिक्सचर और मूंग दाल को मिक्सी के जार में डालकर पल्स मोड पर चलाते हुए पाउडर बना लें। आप इसे बनाने में किसी भी तरह की नमकीन काम में ले सकते हैं। अब हमारा तैयार मसाला इसके अंदर मिक्स कर दें, थोड़े से काजू और किशमिश को बारीक कट करके डाल दें। मसाले में बाइंडिंग लाने के लिए इमली का पल्प मिला दें, अगर मसाला सुखा लगे तो एक चम्मच तेल मिक्स करके हाथ से अच्छे से मिक्स करके छोटी-छोटी गोलियां बना लें। मसाले की गोली है उससे थोड़ी एक लोई लेकर उसमें मसाला दें। एक कढ़ाई में तेल गर्म करें। तेल है। तेल जब हल्का गर्म हो जाए तब एक-एक करके कचोरी को डालते जाए लगभग 8 से 10 मिनट में हमारी कचोरी तलकर तैयार हो जाएगी। कचोरी को चम्मच की सहायता से बीच-बीच में हिलाते रहें ताकि चारों तरफ से सुनहरी हो सके। जब कचोरी सुनहरी हो जाए तो इसे एक जारे की सहायता से एक बर्तन में निकाल लें अब कचोरी को अच्छे से ठंडा होने दें। हमारी कचोरी खाने के लिए तैयार है। आप इस कचोरी को एक से दो महीने तक के लिए स्टोर करके रख सकते हैं।

अब जितनी कचोरी की बड़ी मैदे की लोई तोड़ लें। भरे और अच्छे से सील कर हमें मीडियम आंच पर गर्म करना

जरई

धान रोपने से पहले उसकी नर्सरी तैयार की जाती है और ये नर्सरी से पहले की तैयारी है। धान की नर्सरी को बेरन कहते हैं। बेरन डालने से पहले धान की जरई की जाती है। धान को भिगोकर इकठ्ठा करके ढककर रखा जाता है जब उसमें अंकुर निकल आते हैं तब खेत में पानी भरकर बीज को खेत में बोया जाता है और तीन-चार दिनों तक फिर इस बेरन की खूब रखवाली की जाती है, क्योंकि खेत से पानी घटते ही झुंड की झुंड बया चिड़िया आकर धान चुनने लगती हैं। जब धान के पौधे जम जाते हैं तब कहीं जाकर रखवाली बंद होती है। एक महीने तक लगभग धान की बेरन धान की रोपाई करने योग्य हो जाती है तब उसे उखाड़ कर दूसरे धान के खेत में रोपा जाता है और समय-समय पर खाद, पानी और उचित देखभाल से खेत में धान की फसल लहलहाती है।

अरूणिमा सिंह
लेखिका, लखनऊ

हमारी बेटियां भी धान की फसल की तरह होती हैं, जो पैदा होती, बड़ी होती हैं किसी और घर में और विवाह करके किसी और घर में जाती हैं। उस घर में प्रेम, सम्मान, उचित देखभाल पाकर अच्छी तरह से रच बस जाती हैं और उस घर के वंश को आगे बढ़ाती हैं। यही बेटियां विवाह बाद यदि उस घर में उचित परिवेश नहीं पाती हैं तो कुछ ही दिनों में कुम्हला जाती हैं और उनके जीवन रूपी गाड़ी डगमगाने लगती है। विवाह के समय धान का लावा प्रयोग किया जाता है जिसका यही संदेश होता है कि धान और बेटी दोनों एक जैसे होते हैं। यदि उचित देखभाल मिली तो आपका घर धन, धान्य खुशियों से भर देगे।

रोजगार की समस्या और युवा

रोजगार समीकरण से जुड़े तीन मुख्य पक्ष- बेरोजगार युवा, शिक्षा एवं कौशल व नियोजक और नीतिगत निर्णय। ये तीनों पक्ष यदि सही बैठ जाते हैं तो समीकरण खुद-ब-खुद हल हो जाता है। लगभग 20 वर्षों से रोजगार अधिकारी के रूप में विभाग से जुड़े होने का अवसर, कार्य का अनुभव और इस दौरान अलग-अलग शैक्षिक, आर्थिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के युवाओं के संघर्ष, आकांक्षाओं, हताशाओं और निराशा को करीब से देखने का मौका मिला है।

विभाग द्वारा हर जिले में एक टर्म इस्तेमाल होता है, "रोजगार बाजार"। इस बाज़ार में अलग-अलग स्टेटस वाली नौकरियां/रोजगार डिस्प्ले पर हैं जिसके पास उन्हें हासिल करने के लिए जितनी छोटी या बड़ी योग्यता और अनुभव रूपी करेंसी होगी वो उस स्तर का काम या रोजगार पा सकता है। यहां हमारा सरोकार मुख्यतः छोटे जिलों और अभी भी मुख्य धारा से छूटी हुई जगहों के युवा हैं जिनकी रोजगार को लेकर जद्दोजेहद एक बड़े पैमाने पर ज्यादा रहती है। इक्का-दुक्का व्यक्तिगत प्रयास और सफलता की कहानियां प्रेरणा स्रोत तो हो सकती हैं, लेकिन वो एक पूरे वर्ग की सफलता बन जाए इसके लिए एक सही दिशा में मार्गदर्शन और सघन प्रयास दोनों की तीव्र आवश्यकता है। एक अच्छे रोजगार की तलाश तब खत्म होती है जब वो कर लिया जाए, जो करना जरूरी है और किया जाना चाहिए, न कि जो करना आसान है या आसान लगता है। इतने वर्षों में सबसे बड़ी समस्या यही निकलकर आई है कि हमारे युवाओं की आकांक्षाओं और उनकी वास्तविक तैयारी के बीच एक बहुत गहरी खाई है। इसके अलावा हर क्षेत्र की अपनी एक सांस्कृतिक सामाजिक सोच होती है, एक एप्टीट्यूड या नजरिया होता है रोजगार/ नौकरी/ काम को लेकर। ये सारे बिंदु मिलकर तय करते हैं कि समीकरण का ये हिस्सा कितना तैयार है अथवा नहीं। जॉब फेयर या रोजगार मेलों के दौरान जो भीड़ खड़ी होती है उसे सिर्फ देखकर ही पता चल जाता है कि इन 250-300-500 लोगों की कतार में मात्र 5/10 चेहरे ही ऐसे हैं जिनमें किसी प्रकार का काम करने की कोई ललक है और बाजार में उनकी योग्यता की क्या कीमत है यह भी जानते हैं। बाकी सारे युवा इस प्रक्रिया और अवसर की गंभीरता से बिल्कुल अनभिज्ञ नजर आते हैं। इतना ही नहीं जिस वेशभूषा में जिस व्यक्तित्व को लेकर ये उपस्थित होते हैं वो भी मौके के अनुकूल नहीं होता है।

मीता गुप्ता
जिला सेवायोजन अधिकारी, हरदोई

एक युवा जिसके पास बीएड की डिग्री है वो आकर कहता है कि पेंट बनाने वाली फैक्ट्री में उसकी नौकरी लगवा दें, कोई दूसरा आकर कहता है एक अच्छी सी नौकरी लगवा दें, लेकिन उसे खुद पता नहीं कि वो क्या कर सकता है और कोई मात्र ट्रिपल सी सर्टिफिकेट के भरोसे कम से कम 15000 की नौकरी चाहता है। किसी और का कहना है कि सिक्योरिटी गार्ड वाले ट्रेनिंग में मेहनत बहुत करवाते हैं और कोई तो सीधे मुख्यमंत्री को ही पत्र लिखते हैं कि क्योंकि मैं बहुत गरीब हूं और बीए पास हूं इसलिए मेरे ब्लॉक में मेरी सरकारी नौकरी लगवा दी जाए। निःसंदेह हमारे युवाओं की ये वो तस्वीर नहीं है जिसकी अपेक्षा समाज और सरकार को है, न ही ये वो तैयारी है जिससे हमारे युवाओं के सफल जीवन की परिकल्पना साकार होगी। सेवायोजन के ऑनलाइन पोर्टल पर पंजीकृत अभ्यर्थियों में से मात्र 10 प्रतिशत युवा ही ऐसे हैं, जो किसी भी प्रकार की व्यावसायिक शिक्षा का प्रमाणपत्र रखते हैं और उसे भी वो ठीक से पोर्टल पर दर्ज नहीं कर पाते जिसमें से भी उस क्षेत्र में अनुभव रखने वाले युवाओं का प्रतिशत न के बराबर है। कमोवेश यही स्थिति साल दर साल बनी रहती है।

इसलिए आवश्यकता है कि हमारे युवा कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं पर काम करें जैसे कि अपने को तराशने की मेहनत करें, अपनी भाषा (लिखने और पढ़ने दोनों) को सुधारते रहे। अपने व्यवहार को लोकप्रिय बनाने पर ध्यान दें। बदले परिदृश्य में उनके लिए क्या और कितनी जगह है ये पहले से समझे। अपनी डिग्री/ सर्टिफिकेट का 'रोजगार बाजार' में क्या मूल्य है इसे भी समझें। निरंतर अपनी योग्यता और अनुभव बढ़ाते रहें, क्योंकि लगातार काम करने का तरीका और टेक्नोलॉजी बदलती रहती है। किसी भी जगह नए कोर्स में प्रवेश लेने से पूर्व एक बार जानकारी कर लें कि बाजार में उससे संबंधित कोई काम/नौकरी है अथवा नहीं कितनी मेहनत करनी होगी, कितनी आय हो सकती है और आगे बढ़ने की कितनी संभावना है? और सबसे जरूरी कि कुछ नया सोचने और करने की आदत डालें जिसे हम "आउट ऑफ द बॉक्स" कहते हैं। महत्वपूर्ण बात ये कि सीढ़ी के पहले पायदान पर तो पैर रखना ही होगा देखना बस ये है कि कब तक पहले ही पायदान पर खड़े रहेंगे, या वहीं से नीचे उतर जाएंगे, या फिर लगातार अपनी योग्यता बढ़ाते हुए, अवसरों का सदुपयोग करते हुए आगे बढ़ते जाएंगे।

साप्ताहिक राशिफल

-पं. मनोज कुमार द्विवेदी
ज्योतिषाचार्य, कानपुर

मेष
इस सप्ताह की शुरुआत में आप सामाजिक कल्याण के कार्यों में सक्रिय रूप से भागीदारी करेंगे। आप अपने परिवार रिश्तेदार और दोस्तों में पसंदीदा व्यक्ति के रूप में हो उभरेंगे इससे आपका उत्साह उच्च स्तर पर रहेगा।

वृष
इस सप्ताह की शुरुआत में आपको कोई अच्छी खबर मिलने से आपके पारिवारिक तनाव का अंत होगा। धन के मामले में सुधार होने से वित्तीय स्थिति बेहतर होगी। वाहन खरीदने की योजनाएं बना सकते हैं। आपका विश्वास सार्वजनिक दोस्तों और रिश्तेदारों के साथ अच्छा रहेगा छोटे भाई-बहनों के साथ आपके संबंधों में सुधार होगा।

मिथुन
इस सप्ताह के आरंभ में आप में सुस्ती, शारीरिक कमजोरी, आत्मविश्वास और ऊर्जा की कमी रहने का संकेत मिल रहा है। आपको तनाव थकावट और निराशा की स्थिति से बाहर आने के लिए प्रयास करना होगा। कार्यक्षेत्र में आपकी सफलता कार्य कुशलता को फिर से बेहतर करेगी, परंतु आपका आत्मविश्वास औसत स्तर का रहेगा

कर्क
इस सप्ताह के शुरू का समय महत्वपूर्ण कार्यों को शुरू करने के लिए अनुकूल नहीं है। इसके अतिरिक्त यह समय नए कार्य शुरू करने के लिए भी अनुकूल नहीं है। आपके खर्च नियंत्रण से बाहर जा सकते हैं कुछ यात्राएं थकान वाली और आपकी सेहत व धन की हानिकारक बन सकती हैं।

सिंह
इस सप्ताह के शुरू में आपके शानदार प्रदर्शन की वजह से अचानक से आपके धन और आए में बढ़ोतरी होगी। भाई-बहनों और जीवनसाथी का सहयोग-सलाह-समर्थन आपके धन के प्रवाह में वृद्धि करेगा और आपको अतिरिक्त लाभ हो सकता है। सप्ताह के मध्य के दिन आपके बच्चों के स्वास्थ्य और मन की स्थिति के लिए शुभ नहीं है।

कन्या
इस सप्ताह की शुरुआत में वरिष्ठ अधिकारियों का छुपा हुआ सहयोग प्राप्त होगा। यह आपको पेशेवर मोर्चे पर आगे रखेगा। प्रबंधकीय विषयों के जटिल मुद्दों से निपटने में आपको विशेष मान्यता मिलेगी। सरकारी और प्राधिकरण क्षेत्रों में यह आपको सम्मान देगा, लेकिन कुछ वरिष्ठ अधिकारियों का असहयोग हो सकता है।

तुला
इस सप्ताह आपकी सेहत और कार्यों की उपलब्धियों के लिए इससे पूर्व के सप्ताह की तुलना में बेहतर होगा। सप्ताह के शुरुआत के दिन सकारात्मक बने हुए हैं। यह आपके माता-पिता, दोस्तों की सलाह और ससुराल पक्ष के लिए उपयोगी साबित होगा।

वृश्चिक
इस सप्ताह के आरंभ में अप्रत्याशित स्रोत से अचानक वित्तीय लाभ प्राप्त हो सकते हैं। ये लाभ आपके परिवार में आएंगे। आपको कुछ निराशा और स्वास्थ्य से संबंधित परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता हैं। हालांकि धैर्य बनाए रखने से यह स्थिति शीघ्र ही ठीक हो जाएगी।

धनु
इस सप्ताह के आरंभ में आप अपने दांपत्य जीवन में सक्रिय रहेंगे। भाग्य और जीवनसाथी की सलाह आपको अधिक लाभ कमाने में सहयोग करेगी। भागीदार भी आपसे प्रसन्न रहेंगे। आप और आपके जीवनसाथी के बीच तालमेल उत्तम रहेगा। यह आपके वैवाहिक जीवन के आनंद को बढ़ाएगा।

मकर
इस सप्ताह की शुरुआत में आप मुकदमेबाजी के मामलों को सुलझाने में पैसा खर्च करेंगे। सप्ताह के मध्य में स्वास्थ्य समस्याओं के इलाज पर भी धन खर्च होगा। आप अपने जीवनसाथी के साथ किसी दर्शनीय पर्यटन स्थल की यात्रा पर जा सकते हैं।

कुंभ
इस सप्ताह के शुरुआत की अवधि जोखिमपूर्ण क्षेत्रों में निवेश, शेयर बाजार में निवेश, मनोरंजन, व्यापार, बच्चों के साथ संबंध और प्रेम जीवन के लिए अनुकूल है। बच्चों के भविष्य से संबंधित योजना बनाने के निर्णय इस समय लेना सही रहेगा। छात्र वर्ग का शैक्षिक क्षेत्रों से जुड़े निर्णय लेना इस समय शुभ रहेगा।

मीन
इस सप्ताह की शुरुआत में मां के स्वास्थ्य की कमी आपके तनाव का कारण बन सकती है। आपके वाहनों में कुछ समस्याएं हो सकती हैं। इस समय का उपयोग आप अपने घर के रख-रखाव के लिए कर सकते हैं। कुछ घरेलू मुद्दों के कारण आपको मानसिक तनाव हो सकता है।

वर्ग पहेली (काकुरो)

काकुरो पहेली वर्ग पहेली के समान हैं, लेकिन अक्षरों के बजाय बोर्ड अंकों (1 से 9 तक) से भरा है। निर्दिष्ट संख्याओं के योग के लिए बोर्ड के वर्गों को इन अंकों से भरना होगा। आपको दी गई राशि प्राप्त करने के लिए एक ही अंक का एक से अधिक बार उपयोग करने की अनुमति नहीं है। प्रत्येक काकुरो पहेली का एक अनूठा समाधान है।

काकुरो 86

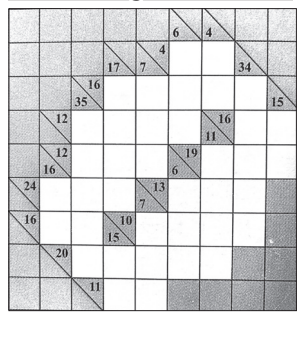

काकुरो 85 का हल

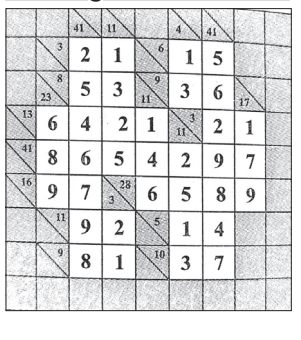

डायबिटीज के कारण और लक्षण

टाइप-1 डायबिटीज को इंसुलिन पर निर्भर डायबिटीज मैलाइटस या बच्चों की डायबिटीज और टाइप-2 डायबिटीज को इंसुलिन पर निर्भर न रहने वाली या वयस्कों में उत्पन्न होने वाली डायबिटीज कहते हैं। इन दोनों प्रकार की डायबिटीज के लक्षण और उपचार लगभग एक समान ही होते हैं। इसलिए मैं इन बातों को दोनों प्रकार की डायबिटीज के लिए एक साथ ही लूंगा। डायबिटीज का एक और प्रकार 'गर्भावस्था की डायबिटीज' होता है। स्त्री को उसकी गर्भावस्था के दौरान डायबिटीज उत्पन्न हो सकती है, इसे हम जैस्टेशनल डायबिटीज अर्थात् गर्भावस्था के दौरान होने वाली डायबिटीज कहते हैं और यह मां और शिशु दोनों को प्रभावित कर सकती है। इसके अतिरिक्त डायबिटीज का एक और प्रकार होता है जिसे हम लोग 'प्रीडायबिटीज' कहते हैं अर्थात् टाइप-2 डायबिटीज होने के पहले की स्थिति। इसमें रक्त की शर्करा का स्तर सामान्य से अधिक तो होता है, लेकिन इतना अधिक नहीं कि हम उसे पूरी तरह स्थापित डायबिटीज कह सकें। ऐसी स्थिति में हम मरीज को सावधान रहने और अपने खान-पान और जीवनशैली में बदलाव लाने के लिए बोलते हैं। डायबिटीज की कुछ अन्य किस्में भी होती हैं, जैसे-मोनोजेनिक डायबिटिक सिन्ड्रोम, सिस्टिक फाइब्रोसिस संबंधी डायबिटीज और दवाओं व रसायनों द्वारा उत्पन्न डायबिटीज। यह अंतिम वाली डायबिटीज कुछ दवाएं खाने से हो सकती है। इन दवाओं में ग्लूको कॉर्टिकोस्टेरॉइड आते हैं, लेकिन डायबिटीज की इन किस्मों का प्रतिशत बहुत कम होता है।

डॉ. राजीव अग्रवाल
तिलहर, शाहजहांपुर

डायबिटीज के सामान्य लक्षण

कुछ लक्षण डायबिटीज के अपने होते हैं और कुछ लक्षण लंबे समय तक रहने वाली डायबिटीज के कारण शरीर के विभिन्न अंगों में होने वाली खराबियों और जटिलताओं के कारण होते हैं। कुछ लक्षण अनियंत्रित डायबिटीज में कीटोएसीडोसिस होने या कभी-कभी डायबिटीज की दवाओं के कारण शर्करा का स्तर कम हो जाने (हाइपोग्लाइसीमिया - हाइपोग्लाइसेमिक शॉक) के कारण होते हैं। लंबे समय तक रहने वाली अनियंत्रित डायबिटीज में आंखें, गुर्दे, हृदय, तंत्रिकाएं, रक्त वाहिकाएं एवं अन्य अनेक अंग खराब हो सकते हैं। शरीर के जख्म सही न होना, फफूंदी द्वारा संक्रमण और मूत्र-मार्ग के संक्रमण इसमें हो सकते हैं। इन सब जटिलताओं के अपने अलग-अलग लक्षण हो सकते हैं।

- प्यास का बढ़ जाना
- भूख का बढ़ जाना
- मूत्र त्याग अधिक होना
- मुंह सूखना
- कमजोरी लगना
- वजन कम होना
- जख्म जल्दी न भरना
- हाथों-पैरों में झनझनाहट या सुन्नपन
- धुंधला दिखाई पड़ना
- सूखी त्वचा
- तरह-तरह के संक्रमण होना जिनमें फंगल इंफेक्शन, मूत्र मार्ग के संक्रमण आदि सम्मिलित हैं।
- यौन संबंधी कुछ विषमताएं, जैसे -यौन इच्छा का कम होना, लिंग में तनाव न होना आदि।
- शेष लक्षण डायबिटीज की जटिलताओं के होते हैं या अन्य प्रकार की डायबिटीज, जैसे- जैस्टेशनल डायबिटीज के होते हैं।

कारण डायबिटीज का पारिवारिक इतिहास होना - हमारे पूर्वजों, जैसे - बाबा, पिता, ताऊ, चाचा, बुआ इत्यादि को डायबिटीज होने पर हमें भी होने की संभावना अधिक होती है, क्योंकि यह एक आनुवांशिक बीमारी होती है। हमारे परिवार में अन्य लोगों को इसके होने का अर्थ है कि इसके जीन्स हमारे परिवार में विद्यमान हैं। ऐसी स्थिति में उन जीन्स के हमारे शरीर में पहुंचने की भी संभावना होती है।

मोटा होना शरीर का वजन आवश्यकता से अधिक होना डायबिटीज को न्योता देता है। इसमें शरीर के मध्य भाग पेट और कूल्हों का भारी होना डायबिटीज उत्पन्न करने के लिए विशेष रूप से खतरनाक होता है। यह अतिरिक्त वसा हमारे यकृत, पैंक्रियाज और रक्त वाहिकाओं में जमा हो सकती है और उन्हें नुकसान पहुंचा सकती है। हमारे पैंक्रियाज को नुकसान पहुंचने पर हमें डायबिटीज होने की संभावना होगी।

खराब जीवनशैली इसमें धूम्रपान, अधिक तैलीय और चीनीयुक्त पदार्थ खाना, तनाव लेना, कम नींद लेना, शारीरिक श्रम न करना, व्यायाम न करना और शराब पीना आदि आते हैं।

ब्लड प्रैशर बढ़ा होना हमारा आवश्यकता से अधिक बढ़ा ब्लड प्रेशर भी हमारे शरीर को अनेक प्रकार से नुकसान पहुंचा कर डायबिटीज उत्पन्न होने में मदद कर सकता है।

अच्छा कोलेस्ट्रॉल (हाई-डेंसिटी लेपोप्रोटीन) कम होना और बुरा कोलेस्ट्रॉल (एलडीएल, ट्राइग्लिसराइड्स) अधिक होना-यह बात भी अनेक प्रकार से डायबिटीज उत्पन्न होने में मददगार हो सकती है।

45 साल से ऊपर होना बढ़ती आयु के साथ इस रोग के होने की संभावनाएं बढ़ जाती हैं।

पैंक्रियाज को नुकसान पहुंचना, जैसे - अनेक तरह के संक्रमण विशेष रूप से कुछ वायरल संक्रमण, पैंक्रियाज के ट्यूमर्स और कैंसर, पैंक्रियाज के ऑपरेशन, किसी दुर्घटना में पैंक्रियाज को चोट पहुंच जाना आदि।

पैंक्रियाज के विरुद्ध ऑटोइम्यून एंटीबॉडीज का बन जाना किसी वायरस के विरुद्ध एंटीबॉडीज बनने पर वह पैंक्रियाज को भी नुकसान पहुंचा सकती है और यह बात डायबिटीज विकसित होने में सहायक हो सकती है।

शारीरिक स्ट्रेस होना जैसे - ऑपरेशन, बीमारियां, गर्भ आदि इन बातों से शरीर पर बोझ पड़ता है और शरीर में डायबिटीज जैसी कुछ बीमारियां उत्पन्न हो सकती हैं।

पॉलीसिस्टिक ओवेरियन सिन्ड्रोम (स्त्रियों में ओवरी की एक बीमारी) होना

मध्य काल में व्यापारिक परिदृश्य

पश्चिमी दुनिया, दक्षिण पूर्व एशिया, चीन, मेडागास्कर और अफ्रीका के पूर्वी तट के देशों के साथ भारत का घनिष्ठ व्यापारिक सांस्कृतिक संबंध था। दक्षिण पूर्व एशिया के विभिन्न देशों ने भारत और बाहरी दुनिया तथा चीन के बीच के व्यापारिक एवं सांस्कृतिक संपर्कों के सेतु का काम किया। यद्यपि इन देशों पर भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति का गहरा प्रभाव पड़ा। फिर भी इन देशों में अपनी एक विशिष्ट और उच्च कोटि की संस्कृति विकसित हुई।

डॉ. नीलिमा पांडेय
प्रोफेसर, लखनऊ विश्वविद्यालय

अरब व्यापारी दक्षिण भारत तथा दक्षिण पूर्व एशिया के देशों के साथ पहले ही व्यापार करते आ रहे थे। अब्बासी साम्राज्य की स्थापना के बाद से वे व्यापारी और अधिक सक्रिय हो उठे,लेकिन अरबों ने भारतीय व्यापारियों और धर्म व देशों को उनके स्थान से च्युत करके स्वयं को वहां प्रतिष्ठित कर लिया हो ऐसा कुछ नहीं हुआ। उन्होंने इस क्षेत्र के लोगों को मुसलमान बनाने की भी कोई खास कोशिश नहीं की। कहा जा सकता है कि इन देशों में अद्भुत धार्मिक स्वतंत्रता और सहिष्णुता का वातावरण था। यहां विभिन्न संस्कृतियों का आपस में सम्मिश्रण होता रहा। इन देशों की यह खूबियां आज भी कायम हैं। इंडोनेशिया और मलाया को इस्लाम की दीक्षा धीरे-धीरे दी गई और यह सिलसिला तब आरंभ हुआ जब भारत में इस्लाम ने अपनी स्थिति पुख्ता कर ली थी। अन्यत्र बौद्ध धर्म फूलता-फलता रहा।

इन देशों के साथ भारत के सांस्कृतिक तथा व्यापारिक संबंध तभी भंग हुए जब इंडोनेशिया में डचों का, भारत, बर्मा तथा मलाया में अंग्रेजों का और हिंद-चीन (इंडो चाइना) में फ्रांसीसियों का अपना-अपना वर्चस्व स्थापित हो गया।

-आर्थिक तथा सामाजिक जीवन और विचार एवं आस्था राजनीतिक जीवन की तुलना में बहुत धीमी गति से बदलते हैं। यही कारण है कि नवीं सदी से पूर्व प्रकट होने वाली बहुत सी विशेषताएं इस काल में भी कायम रहीं। साथ ही अनेक ऐसी नई बातें भी हुईं जिनके कारण यह काल पहले के काल से अलग रंग में सामने आता है। आम तौर पर देखें तो नए तत्व और साथ ही सातत्य के तत्व हर ऐतिहासिक काल में साथ-साथ मौजूद रहते हैं,लेकिन परिवर्तन के परिमाण और दिशा में अंतर होता है।

व्यापारिक परिदृश्यः 800-1200 ईसवी- सबसे पहले हम व्यापार और वाणिज्य से मुखातिब हैं। उत्तर भारत में इस काल को गति-शून्यता का काल माना जाता है। वस्तुतः यह ह्रास का काल भी था। इसका मुख्य कारण सातवीं से दसवीं सदी तक व्यापार और

वाणिज्य में आने वाली अवनति थी। इस अवनति के फलस्वरूप इस क्षेत्र में शहरों और शहरी जीवन का ह्रास हुआ।

व्यापार की अवनति के कारण एक हद तक पश्चिम में रोम साम्राज्य का पतन था जिसके साथ भारत का विस्तृत और लाभदायक व्यापार चलता था। भारत में कभी भी खानों से सोने और चांदी की धातु खास बड़े पैमाने पर नहीं निकाली जाती थी। जिस सोने-चांदी के लिए भारत विख्यात है उसका स्रोत अनुकूल विदेशी व्यापार था जिससे प्राप्त लाभ देश में सोने और चांदी की शक्ल में वापस आता था। इस्लाम उदय के फलस्वरूप जब पुराने साम्राज्य का जैसे ससानी या ईरानी साम्राज्य का पतन हुआ तो उसका भी भारत के विदेश व्यापार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। विशेषकर थल मार्ग से होने वाले व्यापार को साम्राज्य के पतन ने अधिक प्रभावित किया। इसके परिणामस्वरूप आठवीं सदी से 10 वीं सदी तक भारत में सोने के सिक्कों का अभाव दिखता है।

पश्चिमी एशिया और उत्तरी अफ्रीका में एक विस्तृत और शक्तिशाली अरब साम्राज्य के उदय के साथ स्थिति में धीरे-धीरे बदलाव आया। अरब साम्राज्य में ऐसे बहुत से क्षेत्र शामिल थे,जहां खानों से सोना निकाला जाता था। अरब के लोग स्वयं समुद्री गतिविधियों में दिलचस्पी रखने वाले लोग थे। समृद्धिशाली अरब शासकों की भारतीय कपड़ों, सुगंधित द्रव और मसालों की मांग के फलस्वरूप भारत और दक्षिण पूर्व एशिया के साथ व्यापार में खासी वृद्धि हुई। दक्षिण पूर्व एशिया को मसालों का दीप भी कहा जाता था।

नवीं और दसवीं सदी में कई अरब यात्री भारत के पश्चिमी तट के बंदरगाहों पर आए और वे अपने पीछे इस देश की तत्कालीन परिस्थितियों में उपयोगी विवरण छोड़ गए। इस काल में दक्षिण भारत और दक्षिण पूर्व एशियाई देशों तथा चीन के बीच व्यापार में वृद्धि हुई। उत्तर भारत में विदेशी व्यापार 10 वीं सदी से धीरे-धीरे फिर जोर पकड़ने लगा। व्यापार के पुनरुत्थान से मालवा और गुजरात को सबसे अधिक लाभ हुआ। अनुमान है कि गुजरात के चापानेर और अन्हिलवाड़ जैसे कई नए शहरों का उदय इसी काल में हुआ।

प्राचीन वैभव को दर्शाता ओरछा का महल

ओरछा के राम मंदिर और चतुर्भज मंदिर दर्शन के बाद वहां के महल देखने के लिए आगे बढ़े। धूप तेज हो गई थी। गर्मी के चलते वातावरण अलसाया सा लग रहा था। पास ही थे इसलिए पैदल ही चल दिए। महलों वाले इलाके में पहुंचने पर रास्ते में कई ऑटो महल की तरफ जाने वाले रास्ते में खड़े दिखे। हम कुछ सोचें तब तक एक ऑटो वाले ने हमको लपक लिया। ऑटो चालक बालक पवन ने हमसे कहा- 'ओरछा के सारे स्थल घुमा देंगे। चार सौ रुपए लगेंगे।' हमको पवन का प्रस्ताव बुरा नहीं लगा। हम लपक के ऑटो पर चढ़ लिए। महल की तरफ बढ़े। शुरुआत में ही एक जगह टिकट मिल रही थी। ओरछा के सभी पर्यटन स्थल के लिए प्रवेश पत्र। पचास रुपए की थी टिकट।

महलों के प्रांगण में तीन महल अगल-बगल बने हुए हैं। जहांगीर महल, शीश महल और राजमहल। सबसे पहले अपन जहांगीर महल को देखने के लिए आगे बढ़े। महल के प्रवेश द्वार पर ही पर्यटन विभाग के लोग बैठे थे। जहांगीर महल की तरह ऊंधती मुद्रा में। टिकट देखकर अंदर जाने दिया और फिर ऊंधने लगे। जहांगीर महल का निर्माण बुंदेला राजा वीर सिंह देव ने मुगल बादशाह जहांगीर के ओरछा आगमन के समय उनके सम्मान में करवाया था। सत्रहवीं शताब्दी में बनवाए गए इस तीन मंजिला इमारत में कुल 236 कमरे हैं जिनमें 136 भूमिगत हैं। जहांगीर महल को हिंदू-मुस्लिम एकता के प्रतीक के रूप में भी मान्यता मिली। महल के कमरों में पेंटिंग्स के अवशेष दिखते हैं। अधिकतर चित्र रामायण महाभारत की कथाओं के लगते हैं। जब बना होगा महल तो कितना खूबसूरत और आकर्षक रहा होगा।

अनूप शुक्ल
कानपुर

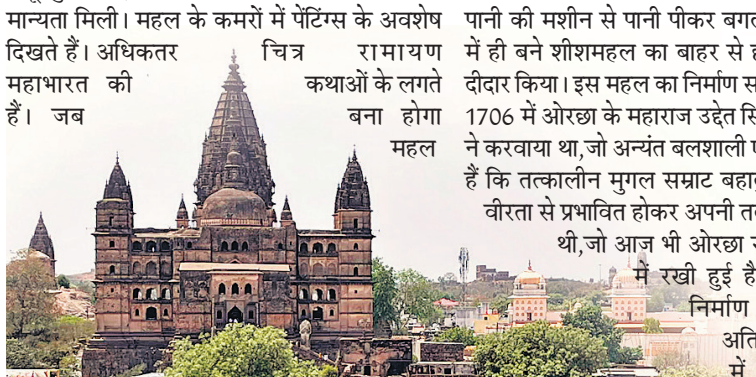

जहांगीर महल देखकर लगा कि पुराने जमाने में राजा महाराजाओं के सम्मान में कितना खर्च होता था। वर्षों की अवधि में बना होगा जहांगीर महल उसकी अगवानी के लिए। खर्च की परंपरा आज भी जारी है। किसी मंत्री के दौरे में रातों-रात सड़क और दीगर निर्माण रातों-रात हो जाते हैं। अधिकतर मंत्री-संतरी भी पुराने जमाने के राजे-महाराजे की तरह ही महसूस करते हैं।

जहांगीर महल से निकलकर बाहर लगी पानी की मशीन से पानी पीकर बगल में ही बने शीशमहल का बाहर से ही दीदार किया। इस महल का निर्माण सन् 1706 में ओरछा के महाराज उद्देत सिंह ने करवाया था,जो अन्यंत बलशाली एवं वीर थे। कहते हैं कि तत्कालीन मुगल सम्राट बहादुर शाह ने इनकी वीरता से प्रभावित होकर अपनी तलवार इन्हें भेंट की थी,जो आज भी ओरछा राज्य के शस्त्रागार में रखी हुई है। शीशमहल का निर्माण वास्तव में एक अतिथि गृह के रूप में करवाया गया था। विभिन्न रंगों के कांच जड़ित होने के कारण ही इसका नाम शीशमहल रखा गया था। इस महल में शाही एवं अन्य कीमती सामान लगा हुआ था,जो धीरे-धीरे गायब होता गया। महल के अंदर भव्य विशाल कक्ष एवं स्नानगृह आदि उस समय के राजाओं की विलासिता के परिचायक हैं।

आजकल शीश महल की देखरेख मध्य प्रदेश पर्यटन विभाग करता है। अपन को यहां रहना तो था नहीं सो इसे बाहर से ही देखते हुए बगल में स्थित ओरछा के राजमहल की तरफ बढ़ गए।

अपने प्राचीन वैभव का निरंतर बखान करता हुआ ओरछा का विशाल राजमहल एक मिसाल है। इस ऐतिहासिक महल का निर्माण भी महाराज वीरसिंह जू देव ने सन् 1616 ई. में करवाया था। महल के प्रवेश द्वार पर अनमने भाव से टिकट देखने वालों के अलावा अंदर लगभग सन्नाटा था। राजमहल के अलग-अलग भाग के बाहर आडियो लिंक के माध्यम इमारतों का परिचय दिया गया था। आडियो लिंक स्कैन करके मोबाइल में खोलकर इमारत का विवरण सुनते हुए आप महल भ्रमण कर सकते हैं।

कुछ आडियो लिंक खुर्ची हुई होने के कारण डाउनलोड नहीं हुई। राजमहल के अलग-अलग हिस्से घूमते हुए उनके किस्से सुने। जनानखाना, नहानघर, निपटानघर, रनिवास, पूजाघर, नौकरों के रहने की जगह और तमाम रिहायशी इलाके देखे। अधिकतर रिहायशी कमरों की छतों, दीवारों पर हिंदू धर्म की कथाओं से जुड़े चित्र बने हुए थे। पुराने हो जाने के चलते चित्रों का रंग फीका पड़ गया था,लेकिन अंदाज लगता था कि जब चित्र बने होंगे तो कितने खूबसूरत लगते होंगे। अफसोस कि इस शानदार महल और चित्र बनाने वालों के नाम का कहीं कुछ पता नहीं चलता।

चतुर्भज मंदिर बनवाने वाली रानी जी की इच्छा थी,उनके महल के कमरे के झरोखे से मूर्ति के दर्शन हो सकें। रानी के महल के कमरे के खिड़की से देखने पर सामने स्थित चतुर्भज मंदिर की मूर्ति साफ दिखती है। अलबत्ता कैमरे की नजर से जब मूर्ति देखने की कोशिश की तो फोटो आया नहीं।

उस समय के नहानघर और निपटानघर भी देखने को मिले। निपटानघर तो आजकल इंडियन स्टाइल के खुले में बने शौचालय सरीखे बने थे। पहली मंजिल पर बने इन शौचालयों की सफाई उस समय के कामगार करते होंगे। शौचालयों की यह व्यवस्था शहरों में तो पिछली सदी के आखिर तक रही। नहाने के साझा नहानघर सरीखे बने थे। उनमें पानी जमा करके लोग नहाने होंगे।

महल की बनावट इस तरह की थी कि हवा का आवागमन सुचारू रहे। एक संकरे से रास्ते से ऊपर की तरफ जाते हुए हवा सरसराती हुई आती महसूस हुई। कितने कुशल रहे होंगे इसको बनाने वाले कारीगर जिनके बारे में आज कुछ पता नहीं। राजमहल से बाहर निकलकर हम आगे की तरफ आए।

समय का उपयोग करने के लिए हम सामने से अंदर घुसे। यह हिस्सा देखने से रह गया था। सामने से दीवाने आम दिखा। दीवाने आम में आम जनता आती होगी। राजा-महाराजा उनकी फरियाद सुनते होंगे। मौके-मूड के हिसाब से निर्णय लेते होंगे। हमने जब देखा दीवाने आम तब वह राजा के रूप में तो कोई नहीं था। अलबत्ता फरियादी वाली जगह पर दो कुत्ते ऊंघ रहे थे। शायद उनकी यही मांग रही होगी कि जहांपनाह हमको इस विकट गर्मी में यहां से निकाला न जाए। चुपचाप पड़े रहने दिया जाए। उनके तसल्ली से पड़े रहने के अंदाज से लग रहा था कि उनकी फरियाद दीवाने आम ने मंजूर कर ली थी।

इतिहास के झरोखे से

पंचाल राज्य का गौरवशाली इतिहास

प्रो. गिरिराज नन्दन
इतिहासकार, आंवला, बरेली

प्रथम जैन तीर्थंकर ऋ षभ देव का काम्पिल्य में धर्मोपदेश

काम्पिल्य का कुछ वर्णन जैन धर्मावलंबियों की पुस्तकों में भी मिलता है। उनके अनुसार जैनियों के प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव के जीवनकाल में स्वर्ग से इंद्र ने मृत्युलोक में आकर इस महानगरी की आधार शिला रखी थी। स्वयं ऋषभ देव ने अपने धर्मोपदेश के लिए काम्पिल्य नगरी को चुना था।

भगवान महावीर द्वारा धर्मोपदेश- हरिवंश पुराण के अनुसार पांचाल प्रदेश को मध्य कोटि के जनपद राज्यों में रखा गया है। महावीर स्वामी ने भी यहीं से धर्मोपदेश को सुनाया था। ऋषभ देव के पुत्र बाहुवली का राज्य त्यागना और मुनि होना देखकर पांचाल के राजकुमार भी मुनि हो गए। उस काल में पांचाल ही मसालेदार मूंग की दाल एक प्रसिद्ध खाद्य पदार्थ थी।

काम्पिल्य तेरहवें जैन तीर्थंकर विमल नाम की जन्म भूमि

हिन्दू जनश्रुतियों के अनुसार सांख्य शास्त्र प्रवर्तक कपिल मुनि की तपोभूमि काम्पिल्य के उपवनों में थी। जैन पुस्तकों के अनुसार तेरहवें तीर्थंकर विमलनाथ का जन्म यहीं हुआ था। विमलनाथ ने जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त काम्पिल्य में ही वास किया। इसी गौरव के कारण समस्त जैनी काम्पिल्य को अपना तीर्थ मानकर यहां की रज अपने मस्तक से लगाते हैं। मुनि विमलनाथ साधरण प्रजाजन नहीं थे। राजा द्रुपद से बहुत पूर्व इक्ष्वाकुवंशी राजा कृतबसु काम्पिल्य के अधिष्ठाता थे। उनकी रानी जयश्यामा के गर्भ से ही तीर्थंकर विमलनाथ का जन्म हुआ था। विमलनाथ ने भी काम्पिल्य में कुछ समय राज्य किया। आखेट खेलते समय एक तालाब के जमे हुए बर्फ को देखकर उन्हें विश्व की नश्वरता का आभास हो गया और वे संसार से विरक्त हो उठे।

द्रौपदी का स्वयंवर काम्पिल्य में- महाभारत काल के सम्राट द्रुपद के कुछ संस्मरण जैन पुस्तकों में मिलते हैं। उत्तर पुराण में लिखा हुआ है कि राजा द्रुपद वहां राज्य किया करते थे। द्रौपदी स्वयंवर के संबंध में उत्तर पुराण में लिखा है कि वह यहीं काम्पिल्य में ही हुआ था।

संकाश द्वारा सांकाश्य की स्थापना- प्रसिद्ध वैयाकरण पाणिनि ने अष्टाध्यायी में संकाश तथा सांकांश्य का उल्लेख किया है। अष्टाध्यायी के अनुसार संकाय नाम के कई व्यक्ति काम्पिल्य में हुए थे। संकाश ने काम्पिल्य के सांकाश्य नामक भाग को पाणिनि के इसी कथन को कौमुदीकार ने भी लिखा है। 'संकाशेन निर्वृत्तम् सांकायम, संकाशादिभोष्यः साकाश्यश्म्। (सिद्धांत कौमुदी तद्धित प्र. सूत्र 1292) 'बृहज्जातक' की महीधर-टीका में काम्पिल्य के एक मुहल्ले का नाम 'कपित्थिक' लिखा है। कपित्थिके काम्पिल्याख्ये ग्रामे (महीधरः) ईसा की सातवीं शताब्दी में जिस स्थान को फाहियान ने सांकाश्य बताया। उसी स्थान को ह्वेनसांग ने आठवीं शताब्दी में कपित्थिक बतलाया। आज वर्तमान कम्पिल (काम्पिल्य) से संकिसा (सांकाश्य) और कथिया (कापित्थि) 20 या 22 मील की दूरी पर है। इससे सिद्ध होता है कि 7 वीं और 8 वीं शताब्दी के समय भी काम्पिल्य अपने पूर्ण वर्तमान स्वरूप में था। शिकोहाबाद से फर्रुखाबाद जाने वाली ब्रांच लाइन पर संकिसा ग्राम 'मोटा' स्टेशन से दो या तीन मील की दूरी पर है। वहां पुरातत्व विभाग ओर से खुदाई की गई थी। खुदाई करते समय वहां एक समुंत, एवं उच्चकोटि के किसी नगर के होने का पता चला है, बौद्ध संस्कृति की कुछ प्रतिमाएं भी मिली हैं। कुछ वस्तुएं जैन एवं वैदिक संस्कृति संबंधी भी मिली हैं। संपूर्ण प्राप्त वस्तुओं का विवेचन करने से ज्ञात होता है कि क्रमशः यहां वैदिक, जैन और बौद्ध संस्कृतियों की प्रधानता रही होगी।

काम्पिल्य के विद्वान प्रसिद्ध- काम्पिल्य अपनी प्राकृतिक शोभा और भौतिक ऐश्वर्य के अतिरिक्त ज्ञान संप्रति के लिए भी प्रसिद्ध था। जिस प्रकार कहीं-कहीं की मिठाइयां एवं अन्य वस्तुएं प्रसिद्ध होती हैं। कसी प्रकार काम्पिल्य के विद्वान प्रसिद्ध थे। जिस समय अयोध्या में दशरथ का राज्य था और मिथिला में जनक का उस समय काम्पिल्य पंचाल के सम्राट प्रवाहण जयबलि राज्य करते थे। वे स्वयं ही विद्वान् थे और प्राचीन उल्लेखों से प्रतीत होता है कि उस समय काम्पिल्य में एक विशाल विश्वविद्यालय भी था। इस विश्वविद्यालय में अनेक विद्याएं पढ़ाई जाती थीं और दूर-दूर से विद्यार्थी यहां अध्ययन करने आया करते थे। उक्त वर्णनों से यह भी पता चलता है कि स्वयं सम्राट जयबलि विश्वविद्यालय में एक आचार्य थे। भारत के सर्व प्रथम दर्शन शास्त्र के प्रणेता कपिल हुए। जिन्होंने सांख्य दर्शन का प्रतिपादन किया। भारतीय दार्शनिक महामुनि कपिल हिन्दू जनश्रुतियों के अनुसार काम्पिल्य के उपवनों के बीच किसी आश्रम में निवास करते थे। प्राचीन काल भारती शिक्षा पद्धति में यह एक क्रांतिकारी प्रयोग था जब कि शिक्षा कार्य को उचित रूप से चलाने और राज्य एवं शिक्षा संबंध को कायम रखने के लिए सम्राट भी विश्वविद्यालयों में आचार्य हुआ करते थे। छान्दोग्योपनिषद् के अनुसार सम्राट जयबलि दर्शन विभाग के आध्यात्म-तत्व एवं ब्रह्म विद्या विषयों के प्रधानाचार्य थे।

पुरातात्विक आश्चर्य बेहटा जगन्नाथ मंदिर

कानपुर की तहसील घाटमपुर विकास खंड भीतर गांव के बेहटा बुर्जुग गांव में जगन्नाथ जी का एक प्राचीन मंदिर स्थित है। इस मंदिर की विशेषता है कि मानसून आने के पूर्व मंदिर के गर्भ गृह में नमी आ जाती है तथा छत से पानी की बूंदें टपकने लगती हैं जिससे स्थानीय लोग वर्षा का अनुमान लगाते हैं। मंदिर का बाहरी स्वरूप स्तूपाकार है,जो 15 फिट मोटी दीवारों से निर्मित है। मंदिर के अंदर का गर्भ ग्रह सपाट एवं अलंकृत पत्थरों से निर्मित है। संरचना को देखकर ऐसा लगता है कि इसका पुनर्नवीनीकरण किया गया है। मंदिर के अलंकरणों एवं शिल्प को देखकर अनेकों इतिहासकार इसका निर्माणकाल महाराज हर्ष वर्धन के समय का मानते हैं। साथ ही यह भी मानते है कि 10वीं,11 वीं शताब्दी में इसका पुनर्नवीनीकरण किया गया है और उसके पश्चात् मंदिर को संरक्षित करने के लिए इसके बाहरी स्वरूप को स्तूपाकार ईटों की संरचना से ढका गया है।

धर्म प्रकाश गुप्त
इतिहास विश्लेषक, कानपुर

स्थानीय किंवदंतियां इस मंदिर को 4000 वर्ष से अधिक पुराना मानती है,परंतु उपलब्ध प्रमाणों के अनुसार इसका निर्माणकाल छठी शताब्दी से 10 वीं शताब्दी तक का माना जाता है। कुछ स्तंभ गुप्त कालीन प्रतीत होते हैं। मंदिर में बलुवा पत्थर के अलंकृत खंभे एवं छत मौजूद है तथा गर्भ ग्रह में स्थापित जगन्नाथ की प्रतिमा विष्णू के 10 अवतारों से सुसज्जित है और प्रतिमा के बाएं हाथ के नीचे जगन्नाथ जी के भाई बलराम जी की मूर्ति उत्कीर्ण है। जगन्नाथ जी की मूर्ति काले पत्थर की बनी हुई है और उसमें दक्षित भारत के शिल्प की झलक मिलती है। प्रमुख बात यह है कि विष्णु के 10 अवतारों में बुद्ध की जगह बलराम का अलंकरण है। इसमें कल्कि अवतार भी उत्कीर्ण है। मंदिर की छोटी कोठरियों में शेषशायी विष्णु एवं सूर्य की उत्कृष्ट प्रतिमाएं रखी हुई हैं। उसके साथ ही मंदिर के प्रांगण में प्रस्तर स्तंभ छत का टूटा हुआ हिस्सा तथा कुछ अन्य कलाकृतियां भी दर्शनीय हैं। मंदिर के प्रवेश द्वार में द्वारपाल की मूर्तियों सहित चक्र तथा मोर की आकृतियां भी बनी हुई हैं। मंदिर के शिखर में उड़ीसा के जगन्नाथ मंदिर की भांति नील चक्र भी विराजमान है। मंदिर की शिल्प कला एवं नक्काशी अत्यंत उच्च कोटि की एवं मनमोहक है।

एक सप्ताह पूर्व मानसून का अनुमान

मानसून आने के लगभग एक सप्ताह पूर्व जगन्नाथ प्रतिमा के ऊपर छत में नमी आ जाती है और उससे पानी की बूंदें टपकने लगती हैं। पानी की बूंदों की मात्रा से स्थानीय लोग यह अनुमान करते हैं कि इस बार बरसात कैसी होगी। मानसून के पूर्व पानी टपकने के कारण पर अनेक लोगों ने शोध किया,परंतु ऐसा क्यों होता है इसका कोई निश्चित आधार निर्धारित नहीं हो सका है। कुछ लोगों का मानना है कि मंदिर की बाहरी स्तूपाकार संरचना वातावरण की आर्द्रता को केन्द्रित कर बलुवा पत्थर की छत को वाष्पीकृत करती हैं जिसके कारण यह नमी आती है और बूंदें गिरती हैं। कुछ भी हो, लेकिन यह एक पुरातात्विक आश्चर्य है।

शहजादे की शिकार से वितृष्णा

मुगल बादशाह जहांगीर का सन् 1605 से लेकर 1627 ईसवी तक का कार्यकाल सामान्यतः एक विचित्र किस्म के विरोधाभासी किस्सों से भरा पड़ा है जिनमें से एक भाग उनके शिकार के शौक पर भी केंद्रित हुआ करता है। दूसरे भाग में उनकी नशे पर निर्भरता का जिक्र होता है और फिर अपराधियों के प्रति उनकी निर्दयता तथा अतिरेक में किए गए अतार्किक निर्णयों पर चर्चा मिलती है। सन् 1618 में उनके द्वारा अपने जीवन में अहिंसा की शपथ लेने तथा सन् 1622 में उसे फिर से खत्म करने के किस्सों पर भी यह चर्चा मिलती है।

अगर केवल जहांगीर के संस्मरणों का अध्ययन किया जाए तो समझ आता है कि 50 वर्ष की उम्र में उनके द्वारा ली गई अहिंसा की शपथ के मूल में पिता के निकटवर्ती मित्र, सहयोगी तथा दरबारी के साथ-साथ पिता के जीवनी लेखक अबुल फजल की हत्या की भूमिका के प्रति खेद की भावना रही है। पिता-बेटे के संबंधों की संवेदनशीलता से एक ओर जहां इस बादशाह ने कभी अहिंसक होने की कसम नहीं खाई था,परंतु स्वयं अपने ही बेटे के विरुद्ध हथियार उठाने की प्रतिज्ञा ने उन्हें फिर से 1622 में हिंसक बनने की ओर उन्मुख होने का बहाना दे दिया था। इस साल उनका अपना बेटा खुर्रम उर्फ शाहजहां खुलकर पिता के विरुद्ध बगावत की मुद्रा में आ गया था। अंततः उस अहिंसक प्रतिज्ञा के खत्म होने की स्थिति और जैन धर्म के अनुयायियों के प्रति बादशाह के रुख पर विद्वानों ने कभी विस्तार से चर्चा करने की जरूरत नहीं समझी।

दरअसल जब सन् 1618 के मध्य में मुल्क के बादशाह ने यह घोषणा की कि वह आज के बाद से किसी जीवित प्राणी, जीव-जंतु को मारने या घायल करने के लिए अपने हाथों में बंदूक नहीं उठाएगा। यह प्रतिज्ञा उन्होंने सच्चे मन से की होगी, क्योंकि ऐसी ही प्रतिज्ञा जहांगीर ने उसी साल फिर से की और सन् 1619 में भी। वास्तविक रूप से उन्होंने केवल अपवाद के रूप में बंदूक उठाई। बाद के समय के लिए यह कहना उचित होगा कि सन् 1622 तक न उन्होंने,न उनके सहयोगियों ने कभी कोई बंदूक उठाई। ऐसे समय और समाज में जहां मुगल बादशाहों की प्रिय परंपरा और शौक जंगल में शिकार करना रहा हो,जहां जानवरों को निर्दयतापूर्वक मारा जाता हो, यह प्रतिज्ञा एक अद्भुत किस्म की और सकारात्मक प्रयास कही जा सकती थी।

जहांगीर, शिकार पर, एक कलाकार की कल्पना।

राजगोपाल सिंह वर्मा
वरिष्ठ लेखक, आगरा

यह कदम इसलिए भी सकारात्मक कहा जा सकता था,क्योंकि जहांगीर को शिकार करने के अपने खेल में जो आनंद आता था वह किसी और चीज में कभी नहीं आया और अगर ऐसा बादशाह इस रुचि से मुंह मोड़ ले तो यह एक बड़ी बात तो थी ही। इसके बावजूद शायद ही कोई तत्कालीन अभिलेख ऐसा होगा जिसमें जहांगीर के इस प्रण पर कोई टिप्पणी या उसका उल्लेख किया गया हो। जब कहीं चर्चा होती भी है तो उसे कोई तात्कालिक और अस्थायी प्रकृति का निर्णय लेकर खारिज कर दिया जाता है। परंतु कुछ विद्वानों ने इस विषय को अपने शोध का विषय बनाया और सिद्ध कर दिखाया कि यह कोई छोटा-मोटा निर्णय नहीं था,जो यूं ही घोषित कर दिया गया हो। ट्रिनिटी कॉलेज के एलिसन बी फाइंडली नामक एक शोधकर्ता का कहना है कि यह घटना जहांगीर के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक कही जा सकती है जिसमें उनके चारित्रिक विकास को स्पष्ट करते हुए जीवन में हिंसा और अहिंसा के भेद को भी समझाने की दिशा में प्रयास किया गया है। ऐसे में इस अहिंसा के विचार को केवल किसी अभिलेख के फुटनोट्स में अ-महत्वपूर्ण रूप से देखना गैर-वाजिब है। इसके साथ ही जहांगीर की यह प्रतिज्ञा अपने पिता और सन् 1600 से लेकर 1604 तक की अवधि में किए गए उनके कामों के प्रति एक सम्मान की भावना और स्वयं द्वारा उनके विरुद्ध किए गए कतिपय कृत्यों के प्रति एक खेद तथा अपराध बोध दिखाती है। इस प्रकार अहिंसा की इस प्रतिज्ञा से हमें खुद जहांगीर के बेहतर व्यक्तित्व का दर्शन मिलता है।

हमारे पास इस बात पर अविश्वास करने का कोई कारण मौजूद नहीं है कि जहांगीर एक विशेषज्ञता वाले अनुभवी शिकारी थे। सूक्ष्म चित्रकला के उदाहरणों में उनके राज्यारोहण से पहले, अर्थात् सन् 1605 से पूर्व और उसके बाद में गद्दी पर बैठने के दौरान की अवधि के शिकार करते हुए अनेक चित्र प्रचलन में हैं। जहांगीर के दरबार में मौजूद यूरोपियन लोग सुदूर क्षेत्रों में उनके इस पसंदीदा खेल के खेलने के गवाह रहे हैं। पीटर वेन डेन ब्रोके जो जहांगीर के शासनकाल में डच प्रशासन के सूरत में बनाए जाने वाले व्यापारिक बंदरगाह का एक तकनीकी अधिकारी था, फ्रांसिस्को पेलसर्ट जो उस समय आगरा की एक फैक्ट्री के वरिष्ठ अधिकारी थे और सर थॉमस रो, मुगल दरबार के पहले ब्रिटिश राजदूत, आदि ने अपने संस्मरणों में जहांगीर के शिकार के शौक पर लिखा है कि वह न केवल शिकार करने के शौकीन थे,बल्कि वह अपने शिकार को जानलेवा निशाना बनाने तक उसका पीछा किया करते थे। जहांगीर की अपनी आत्मकथा 'तुजुक-ए-जहांगीरी' जिसका आरंभ उनके सत्ता संभालने के समय से होता है,में भी इन शिकारों के विस्तृत विवरण का लेखा-जोखा मौजूद है। इसमें उनके उन-उन जगहों पर जाने और तत्संबंधित जगहों पर शिकार में मारे जाने के साथ ही वहां जाने वाले उसके सहयोगियों का भी विवरण दर्ज है।